



नवकार स्वरूप

(जिसमें नवपद के चित्र सहित ग्गो और चौदपुरव
विषय में अनेको विद्वानो मुनियों के अमी-
प्राय और बेभरनामा परसे कुछ
उतारा हाल के वर्तन पर
लालचठी)



लेखक और प्रकाशक

शील्य न्योतिष मंत्र स्वर प्राणायाम योगनीष्ट ध्यानी
मुनीहर्षवीभल जी महाराज

द्वितीय
भास्ती }

प्रति ५००
१९५६

{ मूल्य
११

मेवम् —

शिल्प ज्योतिष मन्त्र स्थर प्राणायाम ध्यानियु

— तपस्वी —

मुनि था हर्षविमल जी महाराज



श्री गुरुभ्यो नमः

स्वास्ति श्री पार्ष्णाथ प्रणम्य श्री । मध्ये अष्टकर्महता
समकित दाता भविजन प्राता, ज्ञानविधान शामन शृणुगार,
शुद्ध धर्म प्ररूपक आत्म कल्याण मग्न जितेंद्रिय भव भ्राति
निवारक, पच समिति धारक त्रिगुप्तए गुप्त, रत्नाकर सम
गभीर, कनकाचलपथ धीर, राग द्वेषने जीतवामासीर भिव्या
तिमिर भास्कर, मुधाकर समान शांत, छे क्वायना रक्षक, धर्मना
उद्योतक, स्याद्वाद शैलीना ज्ञाता, चार कषाय उच्छेदक, यति
धर्मना पालक, आठ मदना टालक, परोपकारीनी प्रतिमा,
विवेकताविलासी, समारना उदासी, शिव रमणीना प्यासी, तत्व
ज्ञानना उल्लासी, मोक्ष मार्गना प्रकाशी परम पूज्य, चिरसांघध,
अनेक गुणालकृत, अप्रतिभ आनंद दायक गुरुवर्य श्री १००८
मुनी राजा श्री

आद्रिनणा लोग

श्री पाली थी लि० आपका दासानुदास चरण रिकर नीचे
सही करनारा समेत समस्त श्री सघनी धदना १०८ वार
प्रेम सहित स्वीकारवा कृपा करसो जी । वीजू आप महा समर्थ
विद्वान् बाणी आपने अमारा नीचे परमाणेना प्रनू प्रन्नो
नी शका समाधान अगर जाणवा नमजवानी इच्छा यतां लखया
प्रेराया ह्ये तो आप वर पोंहचे योग्य उत्तर आ सेरको तथा

संघ उपर कृपा करमोजी ।

(१) श्री नरकार मत्र नो चौदह पुत्रनो साह सी रीने गगवामा आवे तेना कागणो अने भेद होय ते जणावमो ।

(२) श्री नरकार ना पांच पदोना पाष रगोना भेद मू छे ?

(३) श्री उपधान तप अत्यारनी रीनी नो जेरी रीने श्री महावीर ना दम श्रावकों ने चारत्रत अगीयार पढीपाना नाय छे तंय चालू चौविसीपां क्या तीर्थरगो ये क्या क्या श्रावकों ने कराव्या ते सुनोना नाय अगर आ परपरा क्या ची चालू थई ते जाणता होने वगवनी केना चारा भार्या प्रवृत्ती थई ते लखना कृपा करमो एम आपना उत्तर ना कृपाभिन्नापी श्रावको-—

- | | |
|-----------------------------|---------------------|
| (१) भंडारी निवारचंद | (८) पारममल मुगणा |
| (२) दा मोतीलाल | (९) मभूतमल जैन |
| (३) दा. वस्तीमल (काङ्गरीया) | (१०) दा. रतनचंद |
| (४) दाः सा विनेचंद | (११) नेमीचंद |
| (५) उमेदमल रायचंदशाह | (१२) माणेरचंद |
| (६) सुमेर राज ढागा | (१३) भंडारी नेमीचंद |
| (७) अमोलकचंद ढागा | |

इम प्रमाणे पत्र नीचे लिख हुवे १८ आचार्य श्री को लिख भेजा उनों के नाम -

आ उपर प्रमाणे पाली थी महान आचार्यो नीचे ना नामो छे तेओने पोस्ट सार्टीफीकेट थी पत्रों मोकलीया जण १८ ने तेमा जण पाच नो निचे प्रमाणे उत्तर आवयो छे बाकी

ना जण १३ नो उचर आव्या नहीं ।

१८ आचार्यो ना नाम—

ता. ७-८-५१ ने पत्र मोक्ल्या

१ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य महाराज श्री विजय
दर्शन सूरिजी आदीठाणा ३२ अमदा बाद

२ आचार्य श्री १००८ श्री सिद्धिसूरिजी आठे ठाणा ठि० विद्या
शाणा अमदाबाद

३ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विजय रामचद सूरि
जी आठेठाणा ठे० श्री दान सूरिजी जैन ज्ञान शाला अमदाबाद

४ मुनी महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विजय प्रेमसूरिजी
आदे ठाणा ठे० जैन लालबाग बहार कोट मुबई

५ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य विचयेंद्रसूरि आदेठाणा
ठी० जैन श्वेतांबर मुर्तिपुजक उपासरो मु० केकडी अजमेर

६ आचार्य महाराज श्री १००८ श्री ज्ञान सुन्दर सुरीश्वरजी
या देवगुप्त सूरिजी ठी० मोतीचोक जोधपुर

७ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य महाराज श्री विजय लब्धी
सूरिजी जोग ठी० जैन उपाशरो (उत्तर गुजरात) ईडर

८ आचार्य महाराज श्री १००८ मेघसूरिजी आदेठाणा ठी०
जैन श्वेतांबर मुर्तिपुजक उपासरा तपेगच्छ (राजस्थान)
वीरानेर

९ आचार्य महाराज श्री १००८ कर्पिंद्र सागर जी ठी० कुदी
गरोंका मेरु, उत्तरगच्छ का उपासरा जैपुर सिटी

१० मुनि महाराज श्री वीर पुत्र आनंद नागर घरीजी टी०
(मध्य भारत) मुः शैलाना (मालवा)

११ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री विनय बलम घरी
आदेठाणा केसरी (मौराष्ट्र) पालीताणा

१२ मुनि महाराज श्री १००८ आचार्य श्री रत्न घरीश्वरजी
जोग ठे० जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक उपासरो मु० गढ सिताणा
मारवाड।

१३ मुनि महाराज श्री १००८ विद्या विजयजी आदेठाणा टी०
स्टेट ग्वालीयर मु० शिवपुरी जैन चौडांग मे।

१४ श्री मुनि महाराज श्री १००८ पुन्य विजयजी आदेठाणा
ठे० रावडी चोक जैन मूर्ति पूजक उपासरो (राजेस्थान)रीरानेर

१५ आचार्य महाराज श्री १००८ हिमांचल घरीजी आदेठाणा
ठे० जैन श्वेतांबर मूर्तिपूजक उपासरो (मौराष्ट्र) बढयान सिटी

१६ महाराज श्री १००८ श्री लक्ष्मण घरीजी आदेठाणा टी० जैन
श्वेतांबर उपासरो (महाराष्ट्र) जिला सतारा मु० कराड

१७ आचार्य श्री १००८ प्रताप घरीजी आदेठाणा ठे० पायधुनी
गोडीजी नो उपासरो मुचई न० ३

१८ उवाच्याय महाराज श्री १००८ धर्मविजय आदेठाणा ढ
ठे० जैन श्वेतांबर मूर्ति पूजक उपासरो (मौराष्ट्र) राजकोट

पाली श्री महान आचार्योने नवकार चउद पुरवनासार
त्यां पाच रग ना भेद त्यां उपधान तप क्या श्री कने कराचीयो
अगर क्या श्री चालेते स० २००७ सात्रण बद ५ ता, ७-८ ५१

पत्र लिखा

पाच आचार्योंके आये हुये उत्तर सैलाना म० भा० ताः ११ ८ ५१

पत्र न० १

माननीय

जैन श्वे० मु० सघ ममस्त पाली

धर्मलाम, विना ता० मिती का पत्र मिला वह मुनि श्री
हम विमलजी की उम-केरणी से लिखा गया है, एसा पिछले
कार्ड से मालूम हुआ ।

प्रश्न के उधर में हैं -

१ पच परमेष्ठी के गुणों से चौदह पूर्व भरे हैं इससे उनका
यह सार कहा है,

१ केवल ज्ञान के कारण अरिहन्त का सफेद रगः

२ दिव्य प्रकाश मय आत्मा होने से सिद्धोका लाल रग,

३ स्वर्ण वत् निर्मल होने से आचार्य का पीला रग ।

४ वाचना से हृदय हरा कर देने के कारण उपाध्य का हरा रग

५ उग्रतप के कारण तथा आतापना से शरीर पर श्यामत्व

आजाने से साधुम काला रगरा ये सब औपचारिक कथन हैं

३ उपधान का सुलासा रामचन्द्र छरिजी से पूजलेना

विशेष सुलाशा रूपरू हो सकता है

शुभ अग नी आनन्द सागर सूरी

पत्र नः २

श्रावण वदी ४ परमाराध्य पार सिद्धान्त महोदधी
आचार्य देव श्री विजय प्रेम सुरीश्वरजी महाराज तरफ थी

सु श्रावको श्री पाली सघ जोग धर्मलाभ

तमारो पत्र मलेलो। नवकारना पाच परमेष्टीना स्वंपर्याय
अने पर पर्यायनों वर्णन ये चौद पूर्व तथा चौद पूर्वेने पण
अत समये चौद पूर्वेने बदले एना रहस्य भूत नवकारनुं स्मरण
होय छे तेथी चौद पुर्वनो सार नवकार नव पदना पाच पदोना
वर्ण अगे श्री अरिहते घाती कर्म नो नास करी उज्वल ज्ञान
दर्शन स्वात्माया प्रगट कर्या छे पखे सफेद वर्ण, श्री सिद्ध
भगवाने चक्र चक्रता निर्मल लाल धुम सुवर्ण नी जेम सर्व कर्म
कचरो वाली नाख्यो छे तेथी लालवर्ण एम हेतु विचारी
शकाय वाकी वर्ण तेने पदना ध्यान अर्थ छे

उपधान तपनु विधान सारी रीते महानिशीथ सप्रमा छे
ज्ञानाचारनो ए आचार पण छे। उपहाणे तह अ निन्हवणे

धर्म साधनामा उजमाल रहेतु बीजा श्रीजा विकल्पी मा
न उतरता महा उपकारी आपणा पूर्वाचार्यो ये आदरेला मार्गे
स्व स्व उत्साह थी उद्यमगत रहेवु

दा मुनि भानु विजयना धर्मलाभ

सु श्रावक मास्टर जोग धर्मलाभ

पत्र न० ३

ओसवस स्थापक

सु० जोधपुर ताः सा० सु० सुद ६

रत्नप्रमसुरीश्वर पादकमलेभ्योनमः इतिहास प्रमी मुनिज्ञान
ओसवाल सुन्दर ठा० २

सन्त २४००

श्रीमान श्री सद्य ममस्था मु. पाली

धर्मलाम वचियेगा देव गुरुकी पूर्ण कृपासे अत्र इशल
तत्रऽस्तु थापका पत्र यथा ममप मिल गया था। साथ की
राह देखी, न ठुक्रने से आन डाक टाग भेजा जा रहा है, पहुचने
पर पहुँच देना। धर्म कार्य में प्रयत्नशील रहना फक्त
देवगुप्तमूरी ॐ जोषपुर

धर्मलाम । श्री सद्य पाली

प्रश्न-श्री नवकार मंत्र चौदह पूर्वका मार के विषय उचार-
नव मंत्र में अरिहत, मिद्ध, आचार्य, उपाध्याय और साधु है।
इनकी पराचरी करने वाला ससार भर में कोई पदार्थ नहीं है।
अतः नवकार मंत्रको चौदा पूर्व का सार कहना यथार्थ ही
है। दूसरा चौदह पूर्व पढ़कर उमका सार में अरिहतादि पद
प्राप्त करता है उससे भी यही मतलब निकलता है कि
नवकार मंत्र चौदह पूर्वका सार है। प्रश्न-पाच पदोंके रगके
विषय में जिसका उचार पद और पद धारक यहां पदके लिये
कहा जाता है कि पाच पदोंके रूप रग नहीं पर अरूपी है
तथापि ध्यान करने वालों की सुविधा के लिये यथार्थ भाव
से रूपकी कल्पना की गई है। जैसे मिदोंके रूप रग नहीं वे
अरूपी होने पर भी उनकी स्मृति स्थापना की जाती है। इसी
प्रकार पाच पदोंके रगकी स्थापना की गई है-जैसे कि-

१ अरिहंत भगवान को केवल ज्ञान उत्पन्न हुआ वह उज्वल लोहालोक प्रकाश होने से अरिहंत का रंग उज्वल श्वेत वर्ण २ सिद्ध-जीरके साथ तेजस कार्मण शरीरका अनादि सम्बन्ध है । किसी गति जाति में जाने वे दोनों शरीर साथमें ही रहते हैं । पर जब चौदहवें गुणम्यान के अंनमें मोक्ष होने के समय तेजस कार्मण शरीर टुटके अलग होते हैं, तब जीवात्माके प्रदेश तपाया सोने की तरह होने की कल्पना कर भिदों का वर्ण लाल माना है ।

३ आचार्य-शामन की जुम्माचारी आचार्य पर रहती है और प्रति बार्दी के साथ शास्त्रार्थ करने को हमेशा केमरीया कर तैयार रहते हैं, जैसे शूरवीर पुरुष संप्राप के लिये बेसरिया करते हैं, इसलिये आचार्य का रंग पीत वर्ण का है ।

४ उपाध्याय का कर्तव्य है कि वे द्वादशांग सूत्रों की स्वाध्याय करते वा उनकी आत्मा में ज्ञान की तरंगें उठा करती है । जैसे समुद्र में जलकी तरंगें (लहरें) उठती हैं । वे तरंगें हरा वर्णकी होती हैं । इसलिये उपाध्याय का हरा वर्णकी स्थापना की है-

५ साधु-साधु मोक्ष मार्ग की साधना के लिये तप करने में शूरवीर रहते हैं जैसे भटीपर कड़ाई चढाई जाती है तब वह श्यामवर्ण की हो जाती है । इसी प्रकार साधु पदका श्याम (काला) रंग स्थापन किया है-मैंने ऐसा गुरु मुख से सुना है । प्रश्न उपधानके विषय का उत्तर आरक उपधान तपकर यो सूत्र

अर्थ ग्रहण करे, ऐसा शास्त्रों में उल्लेख मिलता है। पर वर्तमान जो उपधान चलता है इसके लिये मैंने मेरी मान्यता आज से ३३ वर्ष पूर्व मेम्बर नामा में व्यक्त कर दी थी वहा से आप देख सकते हैं।

आपको प्रश्नों का सक्षिप्त उत्तर लिखा है उमेद है आपको सतोष होगा पर पट्टुच देरावे स० २००७ सावण सुदी ७-

लि० मुनि हर्ष विमल० मेम्बर नामा तो हमारे बाचने नहीं मिला, लेकिन वो बाचने वाले तटस्थ थावक से पूछा गया था उममें हाल के रीती के उपधान का संप्रण काट कीया इय-यही स० २००७ आसोज सुदी १५।

कागद कराडसे आया मेजनेगले का नाम नहीं और पुरी भिती नहीं लेकिन वहां चातुर्मास आचार्य महाराज श्री लक्ष्मण मुरिजी का था उमसे उन्हीं का ही निश्चय हुवा इनकी नकल नीचे दी है।

पर न० ४

प० पा० आचार्य देवकी ओर से कराड व० १०

पाली श्री संघ समस्त योग्य धर्मलाभ साथे जणाववानु के तमारा बन्ने पर मल्याहता पुरतु जबाबमा ढील धई छे

१ श्री नवकार मत्र ए चौद पूर्व नो सार छे० कारण के मवकार मत्र मां पांच परमेष्टि छे थने पच परमेष्टी वे चौद पूर्व नो सार छे। चौद पुर्वनु ज्ञान पाच परमेष्टि श्वरूप छे.

२ नवकार मत्र ना पाच पदो मां पांच रगो ये रगो आप से

ध्यान करवा माटे आरोपित छे जेमके अरिहंत देवमा शुक्ल ध्यान ये शुक्ल वर्ण, धी सिद्धि मां गतो तेओ ज्ञान रूप अग्नि धी ध्यान अने तप धी कर्मने भस्मी भुत करी नाखे छे एटले लाल चोळ देग्वाय माटे रातो रंग णवी रीते चालता आचार्यों आदि पदो पण समजी लेया ।

३ उपधान तप अगाउ जुदी रीते चालता हता, अत्यारे जुदी रीते चाले छे । पूजाचार्यादि देश काल सघयण विगैरे जोई परिवर्तन कयुं छे अने ते सोने मान्य छे । उपधान तप नो उल्लेख उत्तराध्ययन, महानिश्चि आदि सूत्रों मां छे आ परमाणे हुका मा समजी लेजो । धर्माराधनमां तत्पर रहो ।

सोने धर्मलाभ दा० किर्तीविजय ना धर्मलाम कवर पर पोस्टनी छाप खाना ता. २५ सप्टेबर ५१ पाली २८ सप्टेबर ५१

पत्र न० ५

ॐ नमः श्री गढ सिंहाणा से जिन रत्न छुरि उपाध्याय लब्धिष्णुनि गणि प्रेम मुनि आदि गणा ७ तत्र पाली मारवाड मध्ये श्रावक भंडारी ढागा सुमेरचदजी अमोलखचदजी पारस-मलजी सुराणा भंडारी नेमीचद आदि सघ समस्त जोग धर्म-लाम निवेदन पूर्वक मालुम हो कि आपने ३ प्रश्न भेजे हैं । जिंमका उचार विस्तार तो सन्मुख हो सकता है । पत्रमें तो नाम मात्र लिखा जाता है । सो हमने गुरु मुख सुण और वाचने आया हुवा वर्तमान हमारी समरण शक्ति अनुसार लिख भेजा

है २००८ था० सु० ६ शुनि दा खुद मव श्रावकों से धर्मलाम
 मालुम हो—

१ नौकार के चौद पुर्वनो सार किस तरेसे ? चौदे पुर्वघरोजे
 ये नौकार ने अंत सयभू भन्या ते निगोद् मा गया । आचार्य
 पण अत समये नौकारसू तर्या छे, उपाध्याय पण ये नौकार
 स्मरणे से तर्या छे, साधु मर्य अटी दीप मां है सो नौकार तरेंगे
 और देशवरति सब ममकित धारी नौकार मत्रके स्मरण से
 अते आराधक कहे हैं । तिर्यच पण अत समये नौकार मुणने
 से सद्गती गये हैं वारुते यह हय—चौद पुर्वका सार है महा मत्र
 २ प्रश्न नौकार के बांच पदोंका रग न्यारा २ क्यु ? आराधक
 जीवों के सुलभता लीये अरिहत शुक्ल ध्यान से केवल ज्ञान
 प्राप्त कीया वास्ते श्वेत वर्ण कहा है ।

सिद्धके जीरोंने कर्म इधन जला दिये लाल अगर समान लालवर्ण
 आचार्योंने कर्मशभु जितने के केशरिया किया हय पीतवर्ण
 उपाध्यायने पढनेवाले साधु समुदाय एक बगीचा रूपको ।
 ज्ञान जल सिंचने से हरा बनाते हैं । ४ हर्षावर्ण है ।

साधु सर्व मोक्ष को साधते तपस्या से कर्म को कोलसे
 कर दिये श्यामवर्ण साधुका यह सत्र अपेक्षीक है । साधकजी
 के सुलभता के लिये ।

३ प्रश्न उपधान तपकी शुकाका उत्तर । २४ तीर्थङ्कर में से
 आदि तीर्थङ्कर चरम तीर्थङ्कर के समयके अीरोंको विशेष क्रिया
 निवेदन करी है । सो कन्द सूत्रमें अधिकार आता है । सप्रति

महावीर का शासन है। महावीर की मौजूदीमें श्रावका में १६ वारा व्रतवारी ११ पटीमाधारी थे, मो उपासकदशाग सूत्र से जाण लेणा महावीर मोक्ष गये बाद द्वादश अग फरमावे है जिममें साधु साध्वी जोग बहन करके सूत्र सिखे श्रावक उपधान तप करके आवश्यक ६ प्रतिक्रमण करे तो यथार्थ आराधक होता है। उपधान अधिकार महानिशीथ सूत्रमें है, विवरण नौकार का उपधान में ५ पद की वाचना अउप तप उपर आंसील ८२ हुये बाद नौकार के पाच पद गुरुमुख से सिखे, लारला ४ पद ऐक अठम ५ आवल करे बाद गुरु वाचना देते है। सप्रति सधयण बरु कम होने गीतार्थ पूर्वाचार्यो ने सुख उपधान बाल वृद्ध कर सके वास्ते एकातरीया दश उर्प वास दश एकाशणा कहा है। १२॥ उपनास अर्तिकरे जद नौकार का उपधान होता है।

पत्र न० ६

मु० स्त्रीमाणुनी थी पन्थास मगल विजयजी कोसीलाव मध्ये देवगुरु भक्ति कारक पुण्य प्रभावक थी सध समस्त धर्मलाभ सावे तमारे रजीस्टर पत्र मन्यो व्रण प्रश्नो जनाब मगाव्यो जेमा उपधान कार्य अगे समय विना विस्तार थी न लएता सक्षेप मां जणावनु जे सिद्धचक्र ना बणों सप्रध मा जणावानु जे अर्हत प्रभु ना असख्य आत्म प्रदेश मोहमल विनाना उज्ज्वल होवा ना हेतु थी सिद्ध प्रभु ज्योति स्वरूप होवा थी लाल आचार्य प्रभु कचन जेवा कसोटी मां

तेनस्त्री होवा थी पीला उपाध्याय जी नो आगम नो वगीचो लीलोद्धम ताजो होवा थी हरितवर्ण अने मुनिराज मेघजेरा जगतना ताप ने शुभावनार होई श्याम मेघ भूमी विगेरे गुण हेतु भावना माटे आलबन करवा तथा दर्शन झानादि गुणों पाप कर्म मेल नी शुद्धिकरी आत्म नी उज्जलता करे छे ।

नवकार मय चौद पूरव नो सार मा बघार जोगाने नरकार महात्म्य नु पुस्तक मुनि थी भद्रकर विजयजी ये बहार पाहेल जोवा थी घणु जाणवानु मलशे छता टुक्राण मां जणावानु चौद पूरवनो सार मात्र छे अने ते नवे पद मां मरपुर छे जेम सूर्यना प्रकाश मा वधा प्रकाश समाय तेम नरकार नो प्रभाव मोक्ष साधन मां छे । जे चौद शरीरो पण अणु सण मां नरकार नुज ध्यान करे छे । उपधान सम्बन्ध मां जाणवानु जे आणद काम देवादि श्वकों ना चरित्र पुरे पुरा आगम अभावे मात्र अमुक कीना उपामरुदशांग मा वर्ण बेल छ । हाल मारी पामा न होवा थी बीजा पाटो आगम नालखी सकतो न थी पण आगमो जेने मान्य छे तेने महा नीशीथ सूत्र विगेरे मा उपधान माटे श्रावकों ने अने योग बहन पाटे मुनियो घणा आगमों मां मले छे तथा अतिचार नी आठ गाथा ना काउसग मां काले 'विणये बहुमाणे उग्रहाणे तद्वय निणहवणे' आवश्यक नो सूत्र नो पाठ भय-भीरुमाटे अमूल्य छे । पुण्य प्रकाश मां "मणी ये वही उपधान" आवा अनेक प्रमाणे तथा उपधान विधि मां प्राचीन प्रणाली का केवल आविल उपवास नी हती ते

सधगणादि हेतु की सधे हाल नी चालु विधि आचरेली एवं परपरा गत आगम मान्यज छे तेमा शका करवानु भवमीरु ने शु होय अटेले महावीर देवे ऊया आवकों ने नतअने पडोमानी जेम उपधान ना प्रमाणो नी प्रश्न चरित्तानुवाद करता आगम वाद बलवान छे ते जाणशो वीशेष सुलाशो रूपरु थइ शके छे ।
दुन्दुभि न० ७-A

नमस्कार महा मंत्रनुं रोज प्रातः काले अेकाग्रचित्तं स्मरण करो

(ले० पू० श्री भद्रकर विजय जी महाराज)

जैन मात्र नु एक विशेषण 'श्री पच परमेष्ठी महा मत्र स्मारक' तरीकेनु शास्त्रकारो ये आपेछ छे । प्रत्येक जैन पठी ते चाल हो शूद्र हो, या युवान हो, राजा हो, रक हो, या श्रीमत पुत्र हो, विद्वान हो, पंडित हो, या अपंडित हो, साधु हो, गृहस्थ हो, या सम्यग्द्रष्टि हो-हरेके हरेक श्री नवकार महामत्र नु स्मरण करवा बघायेल छ । जघन्य थी ते पोता ना भाला कर्तव्यने पण अदा न करे, तो तेनु जैनत्व टकी सकतु नथी । तेनु कारण स्पष्ट छे । जैनत्व अे श्री मताई पडिताई के अरीज पीजी कोई लौकिक ऋद्धि सिद्धि साथे सवघ घरा-वतु नथी । जैनत्व ने सत्रघ से आत्मिक ऋद्धि साथे आत्मिक सिद्धि साथे अेरी आत्मिक ऋद्धि, आत्मिक सिद्धि अने

આત્મિક સમૃદ્ધિ શ્રી મરૂર શ્રી પચ પરમેષ્ટિઓ પ્રત્યેનો
 આદર એ જૈનત્વની રક્ષાનું આવશ્યક અંગ છે । શ્રી પચપરમેષ્ટિઓનું
 વિસ્મરણ અને અનાદર અથવા શ્રી પચપરમેષ્ટિઓનું વિસ્મરણ
 ઉપેક્ષાકે અનાદર એ જૈનત્વનું જ વિસ્મરણ ઉપેક્ષા અને અનાદર
 છે । શ્રી પચ પરમેષ્ટિ નમસ્કાર ને શાસ્ત્રકારોએ ચૌદ પૂર્વનો
 સાર કહ્યો છે । તેનું કારણ એ નમસ્કાર સકલ ધર્મ નો વીજ
 છે । વીજ વિના ઝડુર કે શૂણનો આશા જેવ વ્યર્થ છે, તેમ
 આત્મ શ્રદ્ધિના સ્વામી એના પરમેષ્ટિ ઓના નમસ્કાર રૂપી
 વીજ વિના તત્ત્વ ચિંતા રૂપી અંકુર કે ધર્મ સેવન રૂપી વીજનું
 શૂણ અને તેના મર્યાપમર્ગ રૂપી ફલની આશા શાશ્વતી મન્ય
 છે । પરમેષ્ટિઓના નમસ્કાર હૃદય રૂપી ભૂમિના મદર્મ રૂપી
 વીજનું વપન કરે છે અને વિધિર્સૂત્ર વપન કરાયેલાં એ વીજમાં
 શ્રી સદ્ધર્મ ની શુદ્ધિ ના હેતુમૂલ તત્ત્વચિંતાદિ અંકુરાઓ તથા
 સમ્યક્ત્વ અણુત્ત અને મહાશૂતો ના સેવન રૂપી ધર્મ શૂણની
 શાશ્વત પ્રજ્ઞાસાઓ સૈવાર થાય છે । અને તેમાં શ્રી દેવગતિ
 અત મનુષ્ય ગતિના મુરો ની પરપરા મહે અશુભ અને આહ્યા-
 વાચ એવા મિદ્ધિ પદની પ્રાપ્તિ થાય છે માટે જૈન શામન માં
 'નમસ્કાર' એ મહામત્ર છે । મરૂ પ્રહાર ના મુલો નો વધીકરણ
 છે આત્મિક વૈભવના અમિલાણુકોની કામધેનુ જૈનત્વની રક્ષા
 અને વિકાસના પ્રાણ સમાન 'નમસ્કાર' નું રોજ પ્રાતઃ કાલે
 એકાગ્ર ચિત્તે સ્મરણ કરવા નો અભ્યાસ આત્મિક ઉન્નતિ નું
 અમોઘ કારણ મને છે । માટે પ્રત્યેક જૈન આજીવીઆતેનો મોટી

भक्ति पूर्वक आदर करगे जोइये ।

पु० न० ८-A

श्री स्वस्ती श्री पार्श्व जिन प्रणम्य श्री स्थाने सरुल गुण
निधान एक अरिहतनि आज्ञापालक दुविधि धर्म प्ररूपक त्रण
वेदना जिंपरु चतुर गती निकारक पच महाघृत पाठक शत
दांत महंत मुनिमहाराज आचार्य श्री सुरि जोग श्री पोसाती-
या यासुलीखी श्रावक नी बंदना १००८ स्त्रिकारशो जी उपरच
लभवानु के आप पजोशण कई तिथि ने छया चारना करया
धारो छो त्याश्री नवपदजी अरिहत, मिद्ध, आचार्य, उपाध्याय
साधु दरक ना जुदा रग होवानी सु कारण छे तेज लखुना
कृपा करशो, तीर्थकरों ना रग तो तेना जन्म ना बसते ना थाप
छ । परंतु आ पद तो अनादिकाल थी छ तो तेमा अनेक रग
ना जन्मी गंया होय तो पछी एकज रग नो सु कारण छे । ते
लखुना कृपा करतो, विजु देरासरमा प्रभुनी सुल नार्यजी नी
द्रष्टी एमना दरवाजा ना केटला भागमा केटलामे भागे आवयी
जोइये ते पण कृपा करिने लखुना कृपा करशो सबत २००५
ना श्रावण वदी चार । इम तरहसे ३० आचार्य महाराजों को
(कवर) पत्रों नीचे लिखे पत्र पर दिये और जिम तारीख को
दिये उमकी नोंध

१ मुनी महाराज श्री १००८ पन्चास जी श्री रग विजय जी तथा
कनक विमलजी भामा नोपाडो जैन उपाश्रयताः २३ ८ ४८
२ मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री प्रताप सूरीजी

- ३ जैन स्वैताम्बर उपाश्रय (गुजराती) बडोदरा ता २३ ८ ४=
- ३ श्री मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री लक्ष्मीसुरी
जी महाराज ठे० लक्ष्मणपुरा पुना ता. २३ ८-४८
- ४ मुनी महाराज श्री १००८ श्री आचार्य श्री लक्ष्मण सुरीजी
जैन उपाश्रय मु दादर मुंबई ता २३-८-४८
- ५ मुनी महाराज श्री १००८ श्री यतिन्द्र सुरीजी महाराज जैन
उपाश्रय स्टेट पालन पुर ता २३ ८-४८
- ६ मुनी महाराज श्री १००८ कन्याण विजय जी, शौभाग्य-
विजय जी ठे जैन उपाश्रय जालोर ता २३-८-४८
- ७ यति वर्ध पंडीत श्री राजविजय मु० गुढा घालोतरा मारवाड
ता २३-८-४८
- ८ यति वर्ध पंडीत श्री लक्ष्मी मागर जी मु० खारसी (मारवाड)
ता २३ ८-४८
- ९ यति वर्ध पंडीत श्री प्रमोद रतन जी मु० नाडोल (मारवाड)
ता २३-८ ४८
- १० यती वर्ध पंडीत श्री कानमल गुरा मु० चाणोद (मारवाड)
ता २३-८ ४८
- ११ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ श्री हरीमागर सुरीजी
ठे जैन उपाश्रय कोटा राजपुताना ता २४ ९ ४८
- १२ मुनी महाराज श्री १००८ आचार्य श्री इद्रविजय मुरीसर
जी मु० देहली कलौधमील क्वार्टर न० २ डी० बाइन देहली
पत्राय ता: २४ ९ ४८ को भेजा ।

- १३ मुनी महाराजजी श्री आचार्य श्री १००८ श्री महेन्द्र सुरीजी
 टे पादरली जैन उपाश्रय ता: ११-८४८
- १४ मुनी महाराज श्री आचार्य श्री १००८ श्री ठे० तरतगड
 जैन उपाश्रय ता. ११ ८४८
- १५ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, हीमाचलसुरीजी
 वडगाम धाया शीवगज ता: ११ ८४८
- १६ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ रुन्याण सुरीजी
 महाराज-भायघुनी श्री आदेशरजी धरमशाला ता: १३ ८४८
- १७ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, वल्लभसुरी जी ठे०
 वीकानेर जैन उपाश्रय ता. १३ ८-४८
- १८ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, देवगुप्त सुरीजी
 ठे० जोधपुर ता: १३ ८ ४८
- १९ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ ,, रामचद्र सुरीजी
 ठे० फच्छ माडगी ता. १३ ८ ४८
- २० मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ,, प्रेमसुरीजी ठे० समात
 जैन उपाश्रय ता० १३-८-४८
- २१ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ,, नेमीसुरीजी ठे०
 वडगाम जैन उपाश्रय काठीबावाढ ता. १३ ८ ४८
- २२ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ,, सागरानद सुरीजी
 ठे० सुरत जैन उपाश्रय ता १३-८-४८
- २३ मु० महाराज आचार्य श्री १००८ ललीत सुरीजी आत्मा
 नद समा, भावनगर ता० ३० ९ ४८

- २४ मुनी महाराज आचार्य श्री १००८ कीर्ती सागर सूरिजी
 ठे पायधुनी गोडीजी नो उपाश्रय मुवाई ता: ३० ६-४८
- २५ मु० महाराज श्री १००८ ,, दर्शन विजयजी आदीसणा
 मु० पेशाणा ता ३० ३० ६-४८
- २६ मु० महाराज श्री १००८ ,, पन्यास जी पुण्यनन्द विजय
 आदीसणा मु पीडवाला ता' ३० ९-४८
- २७ मु: महाराज श्री १००८ ,, व्याख्या चारित्ररूपजी कपूर
 विजय जी ठे: जैन उपासरा लाठारा ता' ३०-९-४८
- २८ मु' महाराज श्री १००८ ,, आचार्य श्री तीर्थद सूरिजी
 पाकरा मारवाड जे० आर० ता: ३०-९ ४८
- २९ मु० महाराज श्री विद्या विजयजी शीरपुरी ममाधी मदीर
 स्टेट गयलीयर ता' ३० ६-४८
- ३० मु० महाराज श्री १००८ ,, पन्यामजी श्री वीकास विजय
 जी आदी ठाणा २ ठ जन मदीरवाल मुर्तो पुजक साधुयो
 का उपासग मलेर कोटलापिजाय ' ता ३०-६ ४८
- जेना जनायो न आव्या तेमाधी तेपने करीधी कारट लख्या
 तेनो नोंध
- १ मु. महाराज श्री १००८ आचार्य श्री वल्लभ सूरिजी आदी
 ठाणा ठी राम पुरीया जैन भुरन समुदाय वीकानेर
- ३ मु' महाराज श्री १००८ आचार्य श्री कीर्ती सागर सूरिजी
 जोग ठे पायधुनी गोडीजी नो उपाश्रय मुवाई
- ३ मु: महाराज श्री १००८ आचार्य श्री नेमीसूरिजी

४ मु० महाराज श्री १००८ पन्यामजी श्री पुणानंद विजय
 त्या विनय विजय आदीठाणा टे० जैन धर्मशाला पीठवाली
 ५ मु० महाराज श्री १००८ आचार्य श्री ललीत-सूरीजी आदी
 ठाणा आत्मानन्द मभा भावनगर

पाय कार्ट में से आचार्य श्री ललीत सूरीमा कार्ट
 आया । पण सुलाम, धार जबाब नहीं / सब मिलकर २४ पर
 कार्ट आये सो आगे दिये जाते हैं ।

पत्र न० १

ॐ

शुभवार मु० बाकरा

स्वति श्री पंच महाजन समस्त मु० पोसालीया जोग लि
 बाकरा से तुम्हारा पत्र आया आचार्य गुरुदेव व मुनि मण्डल
 मुख माता तुम्हारे प्रश्न निचे मुजब है, अरिहत सिद्ध आचार्य
 उपाध्याय साधु इनका रग जुदा २ पंच परमेष्ठी पांच तत्र ना
 बीजग रूप पांच रग छे पांच रग कल्पना पात्र है न आचार्य
 पिला है न उपाध्याय द्वारा है न साधु काला है । ध्यानालग्नियों
 के लिये पांच तत्रों की उपासना के नास्ते पांच रग की
 कल्पना है । विशेष सुलासा करना हो तो रूपरू मिलेंगे तब
 होगा जिन मन्दिर द्वार के आठा हिस्सा कीया जाय, सात भाग
 के सातमा सात भाग करना, सातमें भागे छप्पी आवे आठमा
 भाग उपर छोड़देना / विशेष पुत्रना हो तो सोमपुरा से पुत्रना
 यहाँ मन सुख सात में विराजमान है ।

लि० मुनि कमले विजय मु० बाकरा जालौर परगना ।

आदेश्वर जी धरम शालामे आचार्य श्री मु० मुचई पायाधुनी
कल्याण सूरिजी को चिट्ठी दी गई थी उनका उत्तर

आदेश्वर जी की धर्मशाला

पत्र नं० २

पोसालीया मध्ये देवगुरु भक्ति कारक श्री सद्य समस्त
धर्मलाम पूर्वक मालुम थाय तमारो पत्र आव्यो वांची समाचार
जान्या ।

बीजु आवती सब्जरी पर्यं भगलवार भाद्रवा सुद ४
ना रोजकरवानी, श्रावण वद १२ मगल रोज थी पर्युपण पर्यं नी
मरुयात, भाद्रवा सुद १ शनीवार ना रोज जन्म जाणवा

बीजु नव पर्दोना रगों शरीर आश्री नधी । परतु
कर्मवार ना अगे मानवा साधु पदमां कर्पो विशेष होवा थी
श्याम रग घतावेला, जेम जेम आत्मा अगाडी बधे छे तेम तेम
रगों फरे छे, जरिहत चार घाती कर्पो नो नाश करेल अने
केवल ज्ञान पोलावे त्या रग सफेद घतावेल छे तेवी रीते हरेरु
ना कर्पो घटता जाय तेम रग फरता जाय ।

बीजु वर्तमान काले दृष्टिनों विषय मीस्त्रीने शूली बग
बर विकास करवना भलामण दृष्टिना विषयमां मेद होना थी
लखाय छे, छेवटे त्रीजा भागे लेवाजी/सर्व सधने धर्मलाम त्या
मुनि कोण चातुर्मास छे ते लखशो मी शुद १४ बुधवार ली०
पोते तखतगढ मा जैनाचार्य विजय हर्ष सुरीश्वर जी महाराज
पीराज मान छे तो तेओने पुछवा महोगवानी कर छो ।

पत्र न० ३

श्रीमान सकल श्री संघ मु० पोमालीया

धर्मलाम बंचियेगा । यत्र वृशल तत्रायस्तु । वि आरका

पत्र आज मिला समाचार ज्ञात हुए

१ प्रश्नोंके उत्तर हम पर्युपण भाद्रवा शुद्ध ४ मंगलवार को करेंगे

२ पच पदोंका रग की यथार्थ कल्पना हम मुजब हैं । १ सिद्ध

का लाल रग सिद्धोंके भूतकाल में तेजस और कारमाण शरीर

साथ में रहा है अतः मोक्ष जाते समय वे जनादिकाल के

तेजस कारमाण शरीर छूटते समय आत्मा के प्रदेश तेजी होने

से रग लाल आता है । अरिहत का सुपेद रग-अरिहत चार

घांटी कर्माका छयकर आत्मा प्रदेशों को निमल बना दिये

इसलिये उनका सुपेद वर्ण माना है ।

३ आचार्य-वादी प्रतिवादी से शास्त्रार्थ करने को केसरिया

करने से नीला वर्ण माना है ।

४ उपाध्याय द्वादशांग रूपी समुद्र में स्वाध्याय रूपी लहरों

में मस्त रहने से नीला वर्ण माना है ।

५ साधु-तप रूपी कड़ाई पर अपना शरीर को तपा रहे इससे

इयाम वर्ण माना है इसप्रकार पाचो पदोंके पाच वर्ण माना है ।

मंदिर का दरवाजे के ६४ भाग करले उसमें ५५ भाग

नीचे छोड़ के प्रभुकी दृष्टि रहनी चाहिये इस विषयमें आचार्यों

के कई मत हैं पर उपरोक्त मत प्रायः सर्व सम्मत है।

धर्म कार्य विशेष रूपसे करते रहना सबकी धर्मलाभ पत्र न ४

पोमालीया श्री सद्य समस्त पर्यूपण पर्यं प्रथम का लिखा हुआ पिनो मितिमा पत्र वर्दी १ को मिला।

महा पुरुषों की स्वाभाविक वैसी ही कातिप्रभा होती है, फिर भी आराधना करने वाले को अनुकूलता के लिये रग चताया,

- मंदिर जी सख्नी तुमारे यहा बोलता वास्तुसार ग्रन्थ है जिमको तुमने चोमासा रफ्या है उनको पुठ सकते हो

लि० कपुर वि० का धर्मलाभ।

श्री द्विपायन ऋषीजी महाराज आप पोमालीया को लाभ देते हो, बडा अन्टा समवानुडुल श्री पर्यूपणा पर्यंकी आराधना हुई है मध जीवों को समाया है, जिमम आपका समावेश होता है,

लि० कपुर वि० ठा० का बन्दना ऽनु बन्दना सुखमाता ग्यमत खामण सुदि ३ मगल लाठारा।

मन को नामवर सस्नेह धर्मलाभ।

पत्र नं ५ जैन ज्ञान मंदिर दादर

पूज्यपाद आचार्य देव श्रीमद् विजय लक्ष्मण सरीरवरजी महाराज की तरफ से श्री सद्य समस्त योग्य धर्मलाभ के साथ लिखनेका कि पत्र मिला।

१ पर्युषण परं ध्रावण वद-१२ मंगलवार को शुरू होगा।
 ऋद्रवा सुद ४ मंगलवार को सप्तमरी होगी बीचमें कोई तिथि
 घटवध नहीं है।

२ नव पद जी ना पदा अनादिना छे ते बराबर पण एना रगो
 गुणने आथयी छे शरीर ने ध्याथयी नहीं।

अरिहत धोणा रंगना अटले घघा थी उच्च छे पाटे
 मफेद निर्मल ज्ञान दर्शन तेथी पण सफेद। सिद्धलाल केम-कारण
 के धर्म मा लीन थाय त्यारे कर्म बल्ले जेप सोनुतपे त्यारे लाल
 चोल थाय तेम सिद्धों ये कर्म बाल्या अटले लाल,

आचार्य पीला होय सूरण जेप किमती वस्तु छे ने ते
 पीलु छे ने ते पीलु छे तेमी आचार्य किमती छे ऊचा छे पाटे
 पीला तेमी रीते गुण प्रमाणे रग समजवा

४ श्री जिनेश्वर भगवान नी दृष्टि बावत मूल गमाना दग्वाजे
 तेजा आठ भाग करवा अने नीचे थी लई उपरना सातमा भाग
 मा दृष्टि आवे अ सातमा भागना पाछा आठ भाग करवाते
 नीचे थी लई सातमा भागे भगवान नी दृष्टि जोइये मतलब
 के-दरवाजा ना' = x ८ = ६४ भाग करवा। नीचे थी लई उपरना
 पचावन मा भागे भगवान नी दृष्टि आवती जोइये धर्मा-
 गधनमा सदा तत्पर रहो सौ ने० धर्मलाभ

द' कीर्ति वि० ना धर्मलाभ

पत्र न ६

सभात श्रवण शुद १३

સિદ્ધાંત મહોદયિ ચારિત્ર ચુડામણિ આચાર્ય શ્રી પદ
 વિજય આચાર્ય શ્રી મદ વિજય પ્રેમસૂરીશ્વર જી મહારાજ તરફ થી
 પોસાલીયા લેન શ્વેતામ્બર સઘ યોગ ધર્મલામ સાથે ભગવાન
 કે તમારો પત્ર મળ્યો તમો પુઠ્ઠા ત્રણ પ્રદનોના ઉત્તર નિવે
 મુજબ આપીયે ઠીકે ।

૧ સવત્સરીની આરાધના આવર્ષે માદરવા શુદ્ધ ૪ મંગલવાર
 ના દીવસે અમો કરવાના છીએ આ• વિ• શ્રી નૈમિ સૂ• ૩•
 વિ• શ્રી હર્ષ સૂ• આ• વિ• વહ્લમ સૂ• આદિ આચાર્યો મંગલ
 વારે સુવત્સરી ની આરાધના કરવાના છે નેન તપા મચ્છ સઘ
 લગભગ મંગલવાર ની સવત્સરી કરવાના છે મંગલવાર ની
 સવત્સરી શાસ્ત્ર અને પરપરા સિદ્ધ છે ।

૨ અરિદ્ધત સિદ્ધાદિ પદોના સફેદ લાલ આદિ વર્ણો જ્ઞાનીઓએ
 નિયત કરેલા છે તેનું કારણ એ છે કે મોક્ષ કામી આત્માઓ
 ના ધ્યાન કરવા માટે નિયત થયેલા છે । હૃદયમથ આત્માઓ
 ધ્યાન સારલમ્બન હોય છે અને વર્ણ વિના ધ્યાન હૃદયમથ
 આત્મા કરી સકતા નથી માટે નિયત વર્ણો છે ।

૩ મૂલ નાયક મગવાન ની દષ્ટિ દ્વારના આઠ ભાગ કરવા તેમા બી
 નીચેના ૬ ભાગ અને ઉપરનો ૨ ભાગ છોટી દેવો વાકી રહેલો જે
 માતમો ભાગ એના આઠ ભાગ કરવા તેમા થી નીચેના છ ભાગ
 છોટી દેવા અને ઉપર નો ૨ ભાગ છોટી દોરો વાકી રહેલા
 સાત મા ભાગ મા પ્રભુની દષ્ટિ આવની જોડે । અત્રે સુગ્ય શાતા
 મા છે । ધર્મની આરાધના કરશો લિ• મુનિ પુણ્યોદય વિજય ।

पत्र न० ७

साधा पीर स्ट्रीट जैन मंदिर न० ६५७ मु० पुना केम्प
(जी०आइ० पी० रेन्वे) आ० १-२ परम पूज्य आराध्यपाद
गुण रत्न महोदधि आचार्य देव श्रीमद् विजय लखिचूरीश्वरजी
महाराज जी परम पुनीत आज्ञा थी ।

पोसालीया मध्ये देवगुरु भक्ति कारक सु श्रावक शा०
मीठालाल जी अदाजीशा पधालाल जी रामजी शा० बाबुलालजी
भीखाजी शा० गणेशमल जी गुलाबजी भादि थी पोसालीया
जैन सघ समस्त योग्य घर्मलाम साथ मालम थायके देवगुरु
पसाये सुखशाता छे तमारो पत्र मन्यो वांची समाचार थणया ।

वि० सं० २००४ ना थावण वद १२ पगलवार
ताः ३१ ८-४८ वी श्री पर्युपण पर्वनी शुरुआत अने भादरवा
शुद ४ पगलवार ७ ९-४८ ना सवत्सरी प्रतिक्रमण आ मुजब
अहिनो सघ अने हमो आराधना करवाना छे । तेमज जैन
समाज ना घणज सघो आ मुजब पर्युपण पर्व करवाना छे ।

प्रभुजी ना गभारा ना द्वार नी ऊचाईना आठ भाग
करवा, उपरनो अंक भाग छोडवो सातमा भागमा आठ भाग
करी उपर नो अंक भाग छोडवो सात भागमा सातमें भागे प्रभु
जी नी दृष्टि राखवी

अरिहन्त पद सउथी उत्तम छे अने ऊचु छे ते थी उत्तम
अने ऊचो रग सफेद कहेवाय छे । ते थी ते पद नो रग सफेद
हुकवी छे बाकी आ चोरीशी पां सर्व तीर्थङ्करों एक वर्ण ना

नयी एक तीर्थङ्कर नो वर्ण नहीं पण अनादि अरिहत नो वर्ण-
 श्वेत सफेद कल्लो छे अने ते कारण सर्वोत्तमता चतारया पाटे
 आ एक कल्पना छे । वीजा पदे सिद्ध भगवान कहैगय ते ते
 अरुपी तेनो तेनो रूप रग होयज नहीं उताय, आलवन मिवाय
 प्यान थई शुक्रेन पाटे वीजापद तरीके लाल रग आणखण
 मापवा मुकयी छे । वीजो पद आचार्य पद छे ते तेनाधी उचारतु
 छे; जेटला पाटे श्वेत अने लाल धी उचारतो रग पीलो रग छे
 अे पदनी स्थापना छे । बाकी आचार्यों जुदा-जुदा रग ना होय
 पण पद से जुदा पाडवा, वीजा नवर ना रग वी ओण खण
 आपी । उपाध्याय चोधु पद ते धी उतरतो होवा धी तेमने नीलो
 रग मां मुक्या । मुनि तेना वी उचारता होवा धी श्याम रग मां
 मुक्या । आसिवाय वीजी कई कारण नधी । दर्शन, ज्ञान, चारित्र
 ,मने तप अे आत्मा ना उज्जवल गुणे होवा धी ये चारतो
 उज्जवल रग मा स्थापना करी कारण के ते गुणी ती अरुपी
 छे । धर्मसाधन पा उधम राखेजी

दः नेम चित्रय ना धर्मलाभ
 लेशा साः २७-८ ४८

पत्र नं० ८

सु श्रावक देव गुरु भक्ति कारक जैन सध धी पोसाळिया
 मिरोही धर्मलाभ क पाद मात्स्य हो कि पत्र मिला घृतान्त
 जाना आपके प्रदनों के उतर नीचे मुजब है ।

१ हम पर्युषण का आरम्भ भाद्रवा वदी १२ मंगलवार को करेंगे
 और पाद्रवा सुदी ४ मंगलवार को पर्युषण का साप्ताहिक

परं प्रतिफलन जादि करेंगे । आचार्य भी विजय विद्वि श्रीपी
 श्री नेमि हरिनी, श्री कल्लम हरिनी, श्री लक्ष्मि हरिनी, श्री
 प्रेम हरिनी मार्गमनी आचार्य महागज शर्मा प्रचार करेंगे ।
 सागरानन्द हरिनी और उनके दृढ वपिट्ट मातु मोदवा श्री
 सारंगरी करंगे ।

० वंश परमेष्ठी के रंगोंके विषयमें सुनाया पद है कि संयुज्जान
 में आगष्पदेश रा ध्यान करने में उनके रंगकी ग्याम जाव
 शकता मानी गई है । अब परमेष्ठी पदों से सब पद पत्र का
 निर्माण और उसकी आराधना अनुष्ठान की वर्ण मयमें इन
 पदों के रंगकी आराधना उचित हुई और प्रत्येक पदके
 रंगकी कल्पना की गई । गुण ध्यान की प्रधानतासे अरि-
 दन्त का रंग श्वेत, ध्यान से कर्मभजन अलाने की कल्पना
 से गिट्टका रंग लाल, सत्य स्थानीय मच्छके समानकी कल्पना
 से आचार्य का रंग पीत (गौर) आचार्य के नीचे और मातु
 पद के उपर की स्थितिपर होने से उपाध्याय का रंग पीत
 तथा कृष्णके विद्वता नील और मातु सपो घ री होने से रंग
 कृष्ण माना गया है ।

दर्शन, ज्ञानादि पद धर्म स्वरूप होने से इनका उज्ज्वल
 रंग माना गया है । इन रंगोंका ग्याम उपयोग ध्यान में है
 अन्यत्र नहीं ।

३ मूल नायक की दृष्टि द्वारके ६४ भाग करके उनको नीचे
 से उपर की तरफ गिनते ५५ वे भागमें मूल नायक की दृष्टि

आये उम हिसाब से भगवान को गद्दीपर विराजमान करना चाहिये ।

कल्याण विनय

पत्र न० ९

माहवी

सुद १४

देवगुरु भक्ति कारक पोसालीया श्रीसय योग धर्मलाभ १० ८-४८ नो पत्र मन्वो,

१ श्रावण घद १२ ने मगलवार थी श्री पर्युपण परनी शुरुआत थाय छे अने मादरवा सुद ४ ने मगलवार ना दिवसे सबत्सरी परनी आराधना छे ।

२ नर पद ना वर्णनों विधि निमाग वार ओलख माटे छे ।

३ द्वारना ६४ भाग करवा अने अमाना ५५ मा भाग उपर दृष्टि होरी जोडये अने धर्मनी आराधना मा अविरत उजमाण रहोजी अत्रो एक नी एक शुभामिलापा ।

पादल नो भाग हमारे त्या रहेल मुनिराज ने वचावशो ।

मुनी श्री हर्षविमल जी जोग अनुमन्दनादि पत्र मन्वो अभि शास्त्र अने शुद्ध परपरा सिद्ध थाती नाम माटे देवनी आराधना अने जनी जाहेरात लाभदायी नथी । समे पर्युपणनी आराधनामा सन्मार्गे छो जाणत आनन्द । प्रभु ध्याननी आराधनामा लीन रही आत्म थैय साधो एक अना शुभामिलाप उपर नो कागद आ० श्री रामचंद्र सरिनी कच्छ माहवी थी आभ्यो ।

पत्र न० १०

थी ।

थी श्वेताम्बर जैन सय-पोसालिया । धर्मलाभ आपका ता: २१ ८-४८ का लिखा हुआ करर मिला समाचार मालूम

हुए आपके लिये मंगलों का सुलाशा इस प्रकार है ।

१ हम और हमारा साधु साध्वी मङ्गल तथा सप्त पर्युषण पर्य
भा०व० १२ मङ्गलवार को प्रारभ तथा भाद्रवा सुदि ४ मङ्गल
वार को सवत्सरी करगे । पचमी का क्षय न मानकर हमारी
परपरानुसार छठका क्षय माना जायगा ।

२ नवपद का रग साधक की भावना को लक्ष्य में रखकर
कायम किया गया है । आजके वैज्ञानिकों ने उच्चतम विचारों
का वर्णलाल माना है और उनसे नीचे कोटी के विचारों का
वर्ण श्वेत माना है । आत्मा के गुण शुद्ध ध्यान मय होने से
अरिहतादि पदों का वर्ण श्वेत, कर्मेन्धनों को भस्म करने में
अग्नि के समान होने से सिद्ध पदका वर्ण लाल, प्रखर बुद्धिचाद
की दृष्टि से आचार्य पद का वर्ण पीला, सुखे हुए धन को
पल्लवित करने में मेघकी उपमा धारण करने से उपाध्याय पद
का वर्ण पीला और साधक अभ्यास कोटि पर आरुढ़ होने के
कारण स्थविर तथा साधुपदका वर्ण काला मान लिया गया
है । यह कल्पना ध्यान के मानसिक भावों पर निर्भर है ।
और नव पदके समान यह वर्ण कल्पना भी सदा कालीन है ।
३ जिनालय के मुख्य दार के आठ भाग करना और उपर का
आठवा भाग छोडकर उसके नीचेके सातवें भागके फिर आठ भाग
करना, उसके उपर का आठवा छोडकर सातवें भागमें मूल
नायक प्रतिमाजी की दृष्टि रखना एसा फेरू इत वास्तुसार
प्रकरण में किया है ।

साधु महल सहित हम यहाँ पर सुख शान्ता में हैं, पोसा
लिया के समस्त आवश्यकों को व थाविशाओं को धर्मलाम
कहती । शुभमिति ।

यतीन्द्रशूरि का धर्मलाम

थराद ताः २६-८८

पत्र न० ११

श्री

श्री बाणो दया गुरा कान् चदली श्री पोसालीया नयरे सु
आवक पुन्य प्रभावीक देव गुर भक्ति कारक नयकार पत्र
ममारक श्री सध समस्त योग्य हमारो प्रीती पूरक धर्मलाम
वचसी श्री सधसे पत्र मिलीयो वो मवाक मी पजुमण परव
संवत्सरी भाद्रवा सुद ४ मगलवार ताः ७-९-४८ के राजू
करेंगे ।) मगवान की दृष्टी मीलान को लीकीप सो पारणा
रा भाग ८ करके सात भाग मोड़देणा अक भाग सु देकणा
सीधचक्र जी का दरक पद में जुदे जुदे रग बतया है वरण
याम्ने । रग फेर मोठा आमातीय सु तयाम काराई लीराये अठा
मरु कोपकाज लीकाँ देव दरमण को यादकरबसी सरव थावकों
ने गरवाल गोपाल बीगेरे ने हमारो धर्मलाम के० देगवसी
पासो पत्र दीतावसी २००४ रा भाद्रवावद ६ और मगवान
रे दीष्टी से मापकरणा होये तो सोमपुरो सरेकुल चौलोदवाले
बोत हुसीपार है उनरा मापमें कोई फार फेर नहीं रोनीनारू
५) पगार राहे ने आरत जायत रोनाचो मो आपकी मुरजी
वे तो सु० अठामु मेजु सो आब रो पासो कागद आयो सु०

उपासने पञ्चमण करुला सो मोमनार की सवमरी परीक्रमण
करुला ४ मोमनार को सवमरी परीक्रमण होवेगा ।

पत्र न० १२

श्रावण सुद ६ देश गारवाड स्टेशन एरणपुरा रोड मु०
तखतगड थी विनय हर्ष खरि आदि पोसालिया तत्र देवगुरु मन्नि
कारक पुण्य प्रभावक श्री सघमस्त धर्मलाभ साये जणावनु के
आजे तमारो पत्र पोच्या अमो पर्युषण श्रावणसुद १२ मंगलवारे
अने सवसरी पर्रनी आराधना भादरवा सुद ६ नोक्षय मानी
भादरवा सुद ४ मंगलवारे करवाना छीए । नवपद मां परमेष्टि
ना रग ना अगे खुलासो मगावेल तेना उत्तर मा जणावानु
के ध्यान मां जणातारग नी अपेक्षाए अथवा कार्यनी अपेक्षाए
कहेल होयानु सभवे छे । मूलनायक नी दृष्टि ना अगे जणा-
वानु के दरवाजा ना बचला भाग ना आठ भाग ना आठ
भाग करवाते मां थी सातमा भाग ना फरिने आठ भाग
करवा अने सातमा भागे दृष्टि राखनी एटले सत्यम मत्यम
भागे दृष्टि राखनी आ रिवाज हाल बधारे छे । चास्तुमारमां दश
भाग करिने सातमा ना सातमा भाग राखवानु पण जणावे
छे । दिगांनर आचार्य बसुन्दी पोताना प्रतिष्ठामार मा द्वार
नय भागो करी तेना मातमा ना सातमा नयमाशमां दृष्टि
मुकवानु जणावे छे । एटले नय भाग नो मातमो भाग तेना
फरी नय भाग करवा अने पाछे बीजी बखत कराएल नव
भागनो सातमां भागे दृष्टि स्थापन करनी, रग बखते अधिकारनी

अपेक्षाए वह होरो नो सभव है छे ।

पत्र न० १३

श्री आचार्य महाराज बल्लभ मुरि नो व्रत प्रद्वन ना उचार
मा नीचे प्रमाणे छापेल होप आव्यो

ॐ अर्ह नमः

श्री आत्मानन्द जैन महा समा पंनाव आरश्यरू सूचना ।
श्री गुरदेव जैनाचार्य श्री १००८ पञ्चाष केसरी श्री विजय
बल्लभ मुरिजी महाराज धीकानेग से निम्न लिखित सूचना पञ्चाष
श्री सचक छिए मेवते हैं ।

पर्व तिथि वार प्रविष्टा

चोपासी अठाई प्रारम्भ आपाङ्ग सुदी ६ मगल ३० आपङ्ग
तारीख १३ जुलाई

चोपासी चौदम ,, १४ ,, ५ आषण २० ,,

श्री पर्युषण पर्व प्रारम्भ मादो रदी १२ ,, १६ भाद्रों ३१ अगस्त

श्री कल्प सूत्र वाचन प्रारम्भ ,, ३० शुक्र १९ ,, ३ सितम्बर

श्री वीर जन्म महिमा ,, सुदी १ शनि २० ,, ४ ,,

तेला घर (तेला) ,, ,, २ अर्षित २१ ,, ५ ,,

श्री सवस्मरी पर्व ,, ,, ४ मगल २३ ,, ७ ,,

पारणादिन ,, ,, ५ बुध २४ ,, ८ ,,

आपविल आली प्रारम्भ आविशन सुदी ८ अर्षित २५ आविशन

१० अक्टूबर

” ” गणपति ” सुदी १५ मोग ३ कार्तिक १८८१
 ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदी १५ जनि २२ ” ६ नवम्बर
 चौपासी अठाई प्रारम्भ ” ” ७ मोग २४ ” = ”
 चौपासी चौदम ” ” ” १४ मोग १ मगल १५
 कार्तिक पूनम (श्री सिद्धाचल की ” १५ मगल २ ” १६ ”
 तथा श्री हरिदानपुर तीर्थका मेला

नोट-स० ११५३ में जोधपुरीय चंडा शुचद्द पचांग में
 भाद्रों सुदि ५ का क्षय था। और दूमरे पचांगों में भाद्रों
 सुदि ६ का क्षय था परन्तु स्वर्गनासी गुरुदेव न्यायमोनिधि
 जैनाचार्य १००८ श्री मद्दु विनयानन्द श्रीधर जी (आत्माराम
 जी) महागज जी साहिब के फरमान के मूजब ६ का क्षय
 किया था इसी तरह सवत १९६२ और १९९० में भी किया
 गया था, इस वर्ष भी ऐसा ही किया गया है अर्थात् इस वर्ष
 भी चंडाशु चंडा पचांग में भाद्रों सुदि ५ का क्षय है और
 दूमरे पचांगों में ६ का क्षय है अत्र पूर्वजत ही भाद्रों सुदि ६
 का क्षय किया गया है। और भाद्रों सुदि ५ कायम रखी गई है।

बड़ोत } 4 Jain College सधका दास
 (जिला मेरठ) } Baraut, परमानन्द औनरेरीमश्री
 १७ ६-१९४८ } (Distt MEERUT) कोटा

पत्र न० १४ अहं नमः कोटा आ० क० ११-बुध
 परम समाननीय पोसालिया निगासी समस्त जैन श्रीसध ?
 सादर धर्मलाभ मालूम हो । यहां भी गुरुदेव की दया
 से कुशल मंगल है आप लोगों की कुशलता सदैव चाहता हू ।
 आपके बड़ा चतुर्मान स्थित मुनिराज श्री हर्ष विमल जी महो-
 दय को भी सादर साता पूछें । बहुधा देहली में उनकी मुला-
 कात हमारे साथ हुई थी ।

आप लोगों का पत्र मिला । पढ़कर बड़ी प्रसन्नता हुई ।
 आप लोगोंने श्री विद्वच्चक्र मंडल में जाने वाले पांच रगोंके
 कारण सवध में प्रश्न किया जो बहुत ही अच्छा है । प्रश्न
 का उत्तर इस प्रकार है ।

पाचों परमेष्ठी-आत्मा द्रव्य के स्वरूप है । आत्मा द्रव्य-
 स्वयं अरूपी-अर्थात् वर्ण रहित, गंध रहित, रस रहित और
 स्पर्श रहित होता है । तो पाचों परमेष्ठी में पांच वर्णों की
 वर्णन क्यों की गई ? यह प्रश्न होना स्वाभाविक है ।

हमारा आत्मा स्वरूप तो अरूपी होता हुआ भी वर्तमान
 में कर्मों की उपाधि से रूपी वर्ण वाला, रस वाला और स्पर्श
 वाला बना हुआ है । पैदा होना और नाश होना भी हम रूपी
 अवस्था में ही अनुभव करते हैं । इसीलिये पैदा होने का हर्ष
 और नाश होने का रज भी हम होता है । उत्पाद के साथ ही
 व्यय लगा हुआ है, इसीलिये हर्ष भी रज से घिरा ही रहता है ।
 अतः हम मौजूदा अवस्था में दुःखी हैं । फिर भी दुःख से

छुटना हम चाहते हैं। ज्ञानी लोग फरमाते हैं कि यदि दुःख से छुटना हो तो देव गुरु धर्म की आराधना करो। ससारी वासना से हम इतने आक्रांत होते हैं कि हम महसा देव गुरु धर्मकी पहिचान भी नहीं पाते। वहा हमारा मन भी नहीं लगता। क्यों कि अनादि काल से कुमग का रग हमारे लगा हुआ है। पचरगी दुनिया में हमारा जीवन भी पंचरगा बन गया है। हमारी भावें बढिया अनुकूल पांच रगोंको पाकर पुश होती हैं और वे पाच रग समारी होने से ससार पृदि के कारण पैदा करते हैं। अतः ससार पांच रग अप्रशस्त माने गये हैं। ससार से मुक्ति पाने के लिये इस वैज्ञानिक ढगसे नवपद रगों का विधान हमारे लिये किया गया है।

१ शुक्ल ध्यान और शुक्ल लेश्या की प्रधानता वाले अरिहत भगवान का शुक्ल सफेद वर्ण।

२ कर्मकाष्ठ जला देने से अग्निकी ज्योति के समान ज्योति स्वरूप की प्रधानता वाले सिद्ध भगवान का लाल वर्ण।

३ शासनके स्वरूप निष्कलक जीवन वाले सुवर्ण को समान श्री आचार्य महारात्र का पीला वर्ण।

४ जिनके पास अध्ययन करके जीत अपनी विवेक चक्षुकी ज्योति को मजबुत बनाते हैं। उन उपाध्याय महाराज का हरा वर्ण। आलों की कारी के बाद हरे रग की पट्टी बधती है।

५ अतरग कर्मों की रागद्वेष की स्यामता को बाहिर निकालने वाले-साधना की कारी कपरिया ओढने वाले, जिसपर दूसरा

रग नहीं चढ़ सकता, ऐसे माधु महाराज का रूपाय रग काला वर्ण

सूरदाम जी ने गाया भी है—

‘सूरदाम की काली कपलिया, चढे न दूजो रग’

६ शुक्र ध्यान और शुक्र लेश्या को पैदा करना ही जिमका लक्ष्य है ऐसा दर्शनवान चारित्र और तपरूप गुणों का धर्म का शुक्ल (सफेद) वर्ण है ।

×

×

×

देवचन्द्र जी महाराज ने पद्म प्रभु स्वामी के स्तरन में भगवान के लाल वर्ण को बताते हुये गाया है ।

‘स्यमन जिनुय योगनो रे लाल, रक्त वर्ण जिनराय रे वाले सर ।

देवचन्द्र शुन्द स्तव्या रे लाल, आप नवर्ण सकाय रे वाले सर ।’

भागवान का रग हमारी चतु इन्द्रिय के योग को सधमन करने रोमने के लिये बताया है । भगवान अर्ण अरूपी विना रग के है ।

पाच परमेष्ठी के ध्यान से नवग्रह जो विविध रग वाले है उनकी पीढी मिटती है—

सफेद १—चंद्र और शुक्र की पीढामें—अरिहंत का ध्यान ।

लाल २—सूर्य और मंगल की पीढामें—मिद्ध का ध्यान ।

पीता ३—गुरु - - - - - आचार्य का ध्यान ।

हरा ४-सुव- - - " " " -उषाध्याय का ध्यान।
 काला ५-शनि राहु और केतु " " " -साधुपद का ध्यान।
 × × ×

१ श्वेत वर्ण के ध्यान से मिद्धि प्राप्ति शक्तिरूपी शक्तिरूप प्राप्त होते हैं

२ रक्त वर्ण के ध्यान से मुक्ति का प्रतीकरण होना है

३ पीत वर्ण के ध्यान से (धर्म की प्राप्ति (ज्ञानादि गुण लक्ष्मी)

४ नील वर्ण से अज्ञान का उच्छादन होता है।

५ काले वर्ण से कर्पाय शत्रु का नाश होता है।

जो कपड पाँच परमेष्ठी के प्रभाव से होता है।

× × ×

सत्व-रजस् और तमोगुण, तंत्रों की प्रधानता और मिश्रण से भी पाँच वर्ण माने गये हैं। रजस् और तमोगुण का पाँच परमेष्ठी के ध्यान से नाश होता है, सत्वगुण पैदा होता है।

पाँचों परमेष्ठी और उनके चार गुण आत्मा रूप होने से अरूपी हैं पर पिंडस्थ और रूपस्थ तंत्र वर्णामक रूपी माने गये हैं। रूपी ध्यान अरूपी पद को पैदा करने के लिये करना चाहिये। इस संघ में बहुत कुछ कहा जा सकता है। अभी इतना ही कहकर समाप्ती करता हूँ। माननीय हर्ष त्रिपल जी महोदय किस प्रक्रिया में लगे हुये हैं? आप लोग संपन्न सव देवगुरु धर्म की भक्ति सेवा साधना में सफल हो यही आत्मा

से चाहता ह । हृष लोहायुट ये तव हर्ष विमलजी सोजत में
 थे याद आता है ।

आप लोग सिद्धचक्र जी के ध्यान से सिद्धि प्राप्त करे
 पत्र को पढ़कर और कोई विचार पैदा हो वे सूचित करें ।
 धर्म ध्यान कर ।

पुण्येश्वर ष्याचार्य देव श्री जिन हरि सागर धरि
 मञ्जन शिष्याणु कवीनुमागर मुनि ।

रग गयो रग गयो रग गयोरे । नव पदके सुरग मन रग
 गयोरे । टेर ।

शुद्ध शुक्ल ध्यान शुक्ल लेश्याविशेष से अरिहत शुक्ल रग
 रग गयोरे । नवपद । १।

ध्यान अगनि से कुकर्म काष्ठ को जलाय के सिद्ध जोति लाल
 रग रग गयोरे । नवपद । २।

शासन सम्राट मूरि बाह्य अतरग से अमली सुवर्ण रग रग
 गयोरे । नवपद । ३।

ज्ञान नेत्र दायी दोष दूर हारी दिव्य रूप पाटक के नील रग
 रग गयोरे । नवपद के । ४।

अतरग स्या^यभेता को र्खाच के नीकालते । साधु बाह्य स्याम
 रग रग गयोरे । नवपद । ५।

दर्शन व ज्ञान चरण तप पद से शुक्ल ध्यान । शुद्ध होत शुक्ल
 रग रग गयोरे । नवपद । ६।

पुण्य साध्य होत है सुपुष्ट साधनों से पायी सिद्ध चक्र पुष्ट
रग रग गयोरे । नवपद । ७।

पाप के निमित्त अग सिद्धचक्र दिव्य रग । मिथ्या अनादि
कुरग गयोरे । नवपद । ८।

श्री हरि पूज्य नवपद मे कमीनुचित अत्र ले सपूर्ण रग रग
गयोरे । नवपद । ९।

पढे- विचारे- प्रश्न हो तो लिये

(इति शुभम्) प्रतिभा जी सपर्या प्रश्न उत्तर बीना पत्रम
दिया जायगा ।

पत्र न० १५

(दूसरी वस्तु पत्र भेजा उसका जवाब पहिले पत्र का जवाब
नहीं जाया)

किशननगर सा० शु० ५ गुरवार विजय ललित
हरि तरफ थी थी सकल जैन सध समस्त धर्मलाभ साथे ह०
के० अगे सुख शाता छे । तमारा पत्रों मल्या पूछेला प्रश्नों
ना उत्तर जोइने लखीशु हाल तरीयत नरम रहे छे । ते थी
हवा फेर माटे किशन-नगर शहर थी रे माइल दूर रहेल छी
अे यहां पुस्तकों जोगमाई नथी । थोड़ा समय मा जवाब जरूर
लखीशुं अेज ।

पत्र न० १६

अहं नम

द्वादशी

माननीय जैन सध पोसालिया !

सादर धर्मलाभ पत्र दिया है वह मिला होगा । श्री मूल-

नायक भगवान की दृष्टि उनके दरवाजे से कितनी रहे ? उत्तर दरवाजा पूरा नाप लो उस नाप के दस हिस्से करो। उसमें सातवें हिस्से के फिर दस हिस्से करो उसमें सातवें हिस्से में भगवान की दृष्टि रहनी चाहिये एसा वास्तु नार प्रकरण में लिखा है। मराम सत्रासे वीररागस्य दूसरा प्रकार भी उसमें लिखा है कि दरवाजा नापके आठ हिस्से करो उनमें भी ऊपर का सातवां भाग उसके आठ हिस्से करो-सातवें भाग पर भगवान की दृष्टि रहनी चाहिये। अर्थात् द्वार नापके ६४ भागकर ५५ वें भाग पर भगवानकी दृष्टि रखो। भागद्वय भणतगो सप्तम सप्तसिष्टिद्वि अरिहता। अत्रिह दम्बना हो तो-नयपुर के वास्तुकार पटित भगवानदाम जैन मोतीमिह मोमिया का रास्ता जयपुर (राजस्थान) में मगाकर देखलें। वास्तुकार पृ० १२७ १२८ का देखना। कर्मीनुगागर

पत्र न० १७

द्विदान्ते वासी

विनय द्विपाचल (हिम्मत मुरि) Bicagaum 10 8 48

— ध्या सर्व सपस्त जोग धर्मलाभ। पत्र मिला सवत्सरी गोमवार की कर्गो। पच परमेष्ठी के पाचो वर्ण अलग २ हैं वो गुणोंके आश्रीत हैं। विशेष वर्णन रूपरू मिलने पर। वर्तमान में मुमुक्षु के नासुग्का औपरोशन कराने के बजह से फिर समय मिलने पर। भगवान की दृष्टिके विषयमें द्वार के सातवें भाग पर होना शास्त्र प्रताता है, तदस्य मुनिगज हर्षविपलभी

से अनुग्रहना सुखशाना, यहाँके श्री सघकी उन्हीं से उदना
 अर्ज और यहाँके सघकी आपसे जयजिनेन्द्र देव दर्शन में पाद
 कर्ना योग्य कार्य लिएना P T O धर्म ध्यान में वृद्धी
 करना और मपाचार आपके स्वरूप से यहाँ फिर पुद्गने पर।
 यहाँ पर प्रतिदिन व्याख्यान होता है। धर्मोपनि श्रेयस्कर है
 काफी तादाद में जनता ध्यान में दीलचरणी से लाभ लेती
 है। किम् अधिकम् आपके तर्क का शुभ संदेश चाहते हैं।
 वर्तमान में दो पचरमी तप सानद सपन्न अठाई महोत्सव के
 साथ हो रही है। दः वि० द्विमाचल वृरि।

पत्र न० १८

श्रावण वदि ९

मु० पोसालीया

पाठक श्री लीः परम पुज्य गुरुदेव श्रीमद् पन्थासजी भी
 रामलजी महाराज साहेब जोग लिखी आदि दाँटा श्रने

पोसालीया मदे मध्वे दत्र गुरु भक्ति कारक समस्त श्री
 संघ योग्य हमार धर्म स्नेह पूर्वक धर्मलाभ वाचजो जत तमारो
 पत्र मन्थो बाची घीना जाणीजी हालमां लखवाने के तपो अे जे
 प्रश्न पुछया तेनो जवाब हवे पछी ना पत्र मां लखीछु ते जाणजो
 पञ्चमण श्रावण वदि १२ श्री गुरुपातने भादरवा सुदी ४ ने
 मंगलवार सवत्सरी छेने भादरवा सुद ६ नो क्षय छे ते जाणजो
 अेज पण अमेति प्रमाणे करवाना छेने अमदावाद आपना
 उपाश्रवे पण ते प्रमाणे यवानु छे तेजाणजो गाम मा सर्व भाई
 वदेनो अे अमार धर्मलाभ कहेजो कागलनो जवाब लखजो

ह० पाटण स० भाभानो चाढा मां भललनो उपाश्रय बाया
 पदेसाणा उत्तर गुजरात ली० पुत्रय गुरुदेव भार्जाकीतमुनि
 कनक विजय ना धर्मलाभ बमारसी मुनि श्री हर्षविमल जी
 ने अमारावती अनुवदणां सुख माता कहे जो ।

पत्र न० १९

आचार्य महाराज श्री ध्यानद मागर स्रीश्वर जी महाराज जी
 अज्ञाथी लि० कंचन विजय सुगत २००४ था० सु० ११

ह० पोमालीया श्री जैन सघ

धर्मलाभ स्था लिखवानु के तमारो ता० १० = ४८ नो
 पत्र मन्यो छे तमारा प्रदनों ना खुलासा निचे मुजबछे पर्युपण
 पर्वका आराधन था० व० ११ सोमा ता० ३०-८-४८ पर्युपण
 प्रारम, था० व० १४ गुरू ताः २-९-४८ कल्पवाचन, था०
 व० ०) शुरु ता ३९-९-४८ जन्मवाचन भा० शु० ४
 सोमता ६ ९-४८ सबस्वरि पर्व इस माफीक आराधना करना-

नवपद में रग ध्यान के लिये गोठवे हुवे है वो रग क्रम
 से उचरते है । दीक्षा ओर विदिक्षा में रगों की मध्यता होने
 से ध्यान करने में अनुकूल होता है ।

द्वार शाख जीम माप की होवे इसका अष्ट भागकर बचला
 जो सप्तमा भाग इस भाग का भी अष्ट भागकर इसका सप्तमें
 मूलनाय जी महाराज की दृष्टि आते हैं जैसे ७२ इंच का द्वार
 शाखमें ६१ इंच आरे ७ दोरे पर दृष्टि आती है । ६१ इंच
 पर मूलनाय जी महाराज री दृष्टि आती है ।

अन त्रि कंचन विजय का धर्मलाम ।

पत्र न० २०

वदे वीरम् श्री चारित्रम्
श्रावक वर्ग श्री सप्त सप्तम्

भा० व० १२ महेशाणा

धर्मलाम ! यद्वा तथा चारे वाजु आठश भा० शु० ११
सोम थी पत्राधन चान्छे मा० शु० ८ मोपवारे सरन्सर्ग छे

सिद्ध चक्रना रगा वाचत श्रीपाल नो गम अने नव पद
विधिमां विगतवार समनावेळ छे तैत्या थी सपजी लेतुं ।

मुल नायक प्रभुनी दृष्टि प्रधानत दरजा नाटोपा मागे आवे ।
जाधी वाचतो रूबरू मा सपजाधी शक्याय पर थी सपजाधी

शक्याय नहीं अत्र ।

(श्रीपाल रास नृपपद विधी मे लिखते हूं रगोंके भेदका सुलामा
(नहीं)

धर्म ध्यान कग्दो ली० मुनि दर्शन विजय ना धर्मलाम ।

ता क.आ पत्र नी कोपीदु कोपी करी छे आवा भा० शु० ११

लखी छे । त्या भा० व० ११ आवे छे पत्र मा मुल छे ।

पत्र न० २१

मु० सादरली पो० तसुतगट मारवाह ता० १०-८-४८

ली० आचार्य थी विषय महेश्वरि प० था० ४ पोमा-
लिया मध्ये देवगुरु भक्तिकारक सुभावक संघ सप्त जोग
धर्मलाम वि० तपारो पत्र मलता अने सुखशात्रि छे तपने सुखशात्रि
वर्ती लखेल वाचत नो जवाय नीचे मुजब-

१ सवरहरी पर्व माद्रवा सुद ४ ना मगल वारे थशे कारण के जोषपुरी पंचाग मा सुद पांचम नो क्षय ३ । सुद ४ सब रहरी पर्व ते थी तेनो क्षय थाय नहीं अटले बीजा पचाग ने आधारे ६ नो क्षय मानवानो छे ।

२ प्रभुनी दृष्टि मभाराना द्वारना आठ भाग करवा तेमा छे भाग नीचे मुकी अने आठमो भाग उपरनो छोटी ने मातमा भागना आठभाग करवा तेना सातमा भागे प्रभुनी दृष्टि आरवी जोइये अेम शिन्प शास्त्र मां कहु छे दोरी थी अथवा फुट पटी थी माप काढी ने जावु ।

३ पंच परमेष्ठी मा पाच वर्ण हाय छे अने ते आनादी थी मनाय छे अे वर्ण ना हेतु जाणवामा नथी । पण तीर्थकना शरीर पाच वर्ण ना होय छ । अने तेओ गुण बी पाचे पद ने स्पशे छे । अे अपेक्षा अे कारण मे कार्य नो उपचार करीने मानी शुकाय !

पत्र न० २२

श्री २००५ माद्रवा ६

मारवाड़-जकमन श्री लखदी सागर रो धर्मलाभमें वचावम श्री पर्युपण पर्व भीती माद्रवा वद १२ वार मगल ने पेटसी संवत्सरी मा० सुद० ४ वार मगल ने होसी प्रभुकी दृष्टि बारखा रा आठ भागकरण जीण मे से एक उपरली छोडणे सातमा भाग पर दृष्टी होखी चाहिजे । निवकार मत्रमें जो पद होवे गुण अरिहत के मपेठ साधु के स्याम है जैसे पंच परमेष्ठी का फेर

जादा बडा उतरना तो ईनका पुस्तक देखणे से साफ साफ
 जाहीर करुला अमार फी वखतमें फुरसत नहीं है जगह-जगह
 के पर्युमण के किस दिन बेटाणे का कागद आ रहे हैं सो
 जवाब देना पडता है भा० वद० ६

पत्र न० २३

वढवाण आचार्य विजयनन्दन छरि

तय श्री देवगुरु भक्ति कारक श्री पोसालिया श्रावक सध
 समस्त योग्य धर्मलाभ ।

अपर सबत १९५२-१९६१ तथा १९८९ नी माफक
 आवर्षे पण भारवा सु० ४ ने मगलमारे श्री सप्तशरी पर्व नी
 आराधना करवाना छीअे अेटले श्री पर्युपण पर्वनी शुरुआत
 अट्टाई धर श्रावण वद १२ मगवार करवाना छीअे

प० पूज्य परमोपकारि प्रात स्मरणीय सासन सम्राट् १०
 पाद गुरु महाराज श्री जी तरफ थी प० पूज्य विजयोद्द छरिजी
 महाराज तरफ थी धर्मलाभ धर्म क्रिया मा उद्यम राखसो जी
 श्रावण सु १४ शुध दः नीति प्रभविजय जीना धर्मलाभ ।

पत्र न० २४

धीकाटा

ॐ

श्रा० व० ७ गुरु

कोठी पल सामे उपाश्रय

२४७४

श्री बढोदा से लि० प्रवाप वि० तत्र देवगुरु भक्ति कारक
 सु श्रावक श्री पोसालीआ जैन सधका समस्त योग्य धर्मलाभ
 वाचना अब देव गुरु पसाय से शाति है पत्र आप सधका

मिला हानमें दूसरी धार्मिक प्रवृत्ति पर होने से आपका खुलामा नहीं लिखते आपको संतुष्ट नहीं कर सका और आपका पत्र से पचा अनुमान से लगता है और कई जगह पत्र आपने लिखकर जवाब खुलासा मांगा है तो मेरे से गीतार्थ ज्ञान पूज्य गुरुश्री की पास से बहुत अच्छा समाधान मिलना समभव है जिसी से भी अगर मतान्तर याने थाप लोगों को धरना सशय नहीं जाय वाम्ते तौलिखना मुनासिर नहीं है धर्म ध्यान में तत्पर रहयेगा याद करने वाले को धर्मलाभ ६

मुनी हर्षविमल का अनुभव

३ अब जैनोंका नवकार मत्र बबलीक में हय, सारी दुनिया जो जो परिचय में आई सो जानती होगी-जैना इनको बहुत से स्तुती में मत्र जपो नवकार, ए छे चौद पुरवानोमाद् जीवता समरो मरना समरो, बेस्रता समरो उठता समरो मुता ममरो जगता समरो बीगैरे बहोत प्रशंगा पुर्वजोने करी हय सो चोलते हय । जर कुन्द् उममें होना चाहिये सो है-सारी दुनिया सारे धर्म सबवस्तु इममें ममाती जो जीतना वर्णन कर मरे उसकी शक्ति और जानपणा अनुभव-

४ अब चौद पुरवका सार सो चौद पुरव क्या थी ब्र ये समजना चाहिये पुरव ये विद्याकी शक्ती का माप बताया नाम चौदाके ही जुदे २ हैं-सो एक पुरव एक हाथी बराबर मसीकी साइसे लीखने पुरा होवे फेर आगे दूसरा पुरव दो हाथी, तीसरा शूब चार हाथी बराबर ऐसा दरेक पुगव दबल दबल करने चौदा पुरवमें

१६३८३ हाथी चराचर मसीकी साई बनाई जाय उतना लीखा जाय जब पुरा होवे प्रमाण बताया लेकीन आगे के जमाने में एक पाठी दो पाठी विद्वान अभ्यास करते थे आयुष और सरीर का प्रमाण भी क्यादा था सो अची जुने जमाने के हाड पींजर सोध खोलमे मिलते हैं । वो ही जनों के शास्त्रों की सचाईको सिद्ध करते हैं । उम चौदा पुराघमें सारी दुनिया की कोई भी वस्तु बाकी नहीं रहती-सब आजाती लेकीन सिखाने वाले जैनसाधु धृतीमें लाकर सब दुनिया की विकारी वस्तुका त्याग कसकर पीछे सिखाते थे । सिखाने वाले का दिल भी दुनिया पर से हटजाता था वो समझते थे कि ये जानने के लिये हय उपयोग करने में हिंसा होवे और ससार बूढ़ी होवे-समार का जीवन विनाशी हय थडी गरमी भुख प्यास बीमारी शत्रु बीगरे भय तो है ही लेकिन किस बखत मौत उठावेगा सो पता नहीं । फेर पाताके गर्म में अशुची मे निकालना, जन्म बखतकी तकलीफ, बुढापे की तकलीफ जानने से वो विरक्त भावना से तबजप ध्यान मे ही मस्त रहते थे-जरी वो रिद्याओं प्राप्त होती थी-

५ अब हम परमाने नवकोठे मे उसमें नाम और रग ये सारे जगत्पती उममें रमण और उसीमें से मुक्ती का मेद मिलता हय । जैसे ज्योतिष में चारारासी धारा लगन और नयग्रह दुनिया के मनुष्य और देसो पर अधिपत्य स्थापीत होते सुख चढती पडती रोग गृत्यु बगैरे इन रिद्याके पारगत



१६३८३ हाथी परावर मसीकी साई बनाई जाय उतना लीखा जाय जब पुरा होवे प्रमाण बसाया लेकीन आगे के जमाने मे एकपाठी दो पाठी विद्वान अभ्यास करते थे आयुष और सरिर का प्रमाण भी ज्यादा था सो अबी जुने जमाने के हाड पीजर मोष पोलमे मिलते हैं । वो ही जनों के शास्त्रों की सचाईको सिद्ध करते हैं । उम चौदा पुरवमें सारी दुनिया की कोई भी वस्तु बाकी नहीं रहती—सब आजाती लेकीन सिखाने वाले जैनसाधु धृतीमें लाकर सब दुनिया की विकारी वस्तुका त्याग कराकर पीछे सिखाते थे । सिखाने वाले का दिल भी दुनिया पर से हटजाता था वो समझते थे कि ये जानने के लिये हय उपयोग करने में हिंसा होवे और समार घृद्धी होवे—समार का जीवन बिनाशी हय, चडी गरमी भुख प्यास बीमारी शत्रु बीगेरे मय तो है ही लेकिन किस बखत मौत उठावेगा सो पता नहीं । फेर माताके गर्भ में अशुची मे निकालना, जन्म घण्टकी तकलीफ, जुटापे की तकलीफ जानने से वो त्रिरक्त भावना से तपजप ध्यान मे ही मस्त रहते थे—जरी वो विद्याओं प्राप्त होती थी—

५ अब इस परमाने नवकोठे में उसमें नाम और रग ये सारे जगत्पती उमम रमण और उसीमें से मुक्ती का मेद मिलता हय । जैसे जोतिष में चारारासी नारा लगन और नवग्रह दुनिया के मनुष्य और देसो पर अधिपत्य स्थापीत होते सुख दुःख चढती पडती रोग गृत्यु वगैरे इन विद्याके पारगत



बता सकते, वैसे ये दुनियाँ की उत्पत्ती किस तरह सो सारे
 विज्ञानी सोधक नास्तीक और आस्तीक को मजूर करना पड़ेगा।
 १. अब हम नियमों पहिले साधुपद लेकर फिर उपाध्याय
 आचार्यपद आता हय। सो वो साधुपद रगमें काला हय। सो
 आकाश तत्वका रंग बताया हय। उधार क्या हय नमोलोएसच्च
 साह्य सो जैनाम हाल साधुपद २८ गुणोमहीत अदीदीपम होवे
 उनोको नयम्कार। ये इनकी अगत मान्यता हुई लेकीन यहाँ पर
 पृथ्वीकी उत्पत्ती बताया हय। और वो पदमें भी अठार का
 नाम बताया नहीं। एणमव्व इमका अर्थ मारा लोक हुआ सारे
 लोकमें क्या था-आकाम याने अवकास काला रंग २ फीर
 उपाध्याय इमारग सो वायु तत्वका माना गया हय। सो पहिले
 आकास वसमें से वायुकी उत्पत्ती हुई। फिर आचार्य श्रीला
 राम सो पृथ्वी का माना गया हय वायुमें से पृथ्वी तत्व (जमीन)
 की उत्पत्ती हुई-४ फीर अरिहत सफेद सो जल तत्वका रंग
 माना गया हय। पृथ्वीमें से जलकी उत्पत्ती हुई ५ फीर सिद्ध
 लालवर्ण पाता गया सो अग्नी तत्वको सुल अग्नी पाणीके
 सवर्ण से हुई अभीरी समुद्रों में बडवानल अग्नी देखने में
 आता और बरसाद के बादलों में बीजली उत्पन्न होती और
 हालमें कितनेक ठिकाने पाणीगंधन से बीजली बन रही-

अब ये प्राच तत्वोंमें आकाम काला जल सफेद और अग्नी-
 लाल सो प्रगट देखने में आते लेकिन पृथ्वी पीला और वायु-
 हरा क्या मनाया सो वांचक वर्णको मदेइ रहेगा सो डालते हैं।

अब जमीन चाहे मो रगकी हो लेकिन अंदर पीन बोने मे
 जहातरु हवा न लगे पृथ्वीके पडमें हो-उमरे अक्षर का पीना
 रग आता है और पीन मी मर्यादा पीन बन जाता है और चाहेर
 आने से हवा लगने से हवा बन जाता है । कोई पूछे हवा
 मचको लगती जर मच हरे कैसे नहीं बनते मो गुन्नामा हवा
 जैन मास्यों में ८४ लाख जीवोंकी जातीमे हवा एक इट्टी
 जानी में सातलाय प्रकार माने है । और बनस्पती को मी एक
 इन्द्रिय वाले माने दमलाय और चौदालाय जाती या प्रकार-
 उमरा गुन्नामा दमलाय जाती प्रत्येक बनस्पती बनाई । प्रत्येक
 का अर्थ एक वस्तुमे एक जीव और साधारण में एक वस्तु मे
 अनेक जीव रा कैसे प्रत्येक बनस्पती तोटे पीछे तुम दुपलाने
 लगेगी और साधारण घड़ीनों अगर बरमों तरु टहनेगी । उममें
 अनेक भेद जैन मास्य दसो और हवा पेंड्री उमकी जातीपर
 असर क्रिया । चढ़कर शागे घटनाने वालों पर अमर नहीं होती ।
 ६ मो पाच तारों का खेल मो जगत कहलाया । ऊपर इमे पंच
 भुतमी कहते है । अब ये पंचभुत सुक्ष्म से सुक्ष्म परमाणु से
 पहिले बनते हैं जिनोंके ग्रन्थमें इमे सुक्ष्म निगोद नामसे माना
 है जैसे चादलों के घर्षणसे बिजली उत्पन्न होती वैसे ये आपम
 में घर्षणसे चेतन उत्पन्न हुवा उमसे जीव माना गया
 और अचेतन गहा मो जड या अजीव माना गया और ये सुक्ष्म
 सबलोक (जगत) में भरा है जिनोके शास्त्रों म प्रमाण १४ राज्
 लोक बताया हय ।

७ अब तीरोही उरपतीके साथ वो जड़ तत्वमी लगा रहता है ।
 जैसे मोने की उरपती के साथ पाटी भी लगी रहती है और
 उसमें अग्नी सस्कार और घुटना पीटना रींगरे ज्यादा होते
 होते वो शुद्ध कुंडल बनता है और यहा जैन शास्त्रों में सुक्ष्म
 निगोद में तीरोका जनप-मरण मनुष्य के एक इरमोइशम
 जिनने टाइप में साठे सतरा घटते होता है ऐसा होवे साथमें
 लगी हुई अहमन्तु घटते पाटा निगोद में आता है बादर निगोदये
 की मनुष्योंके चर्मचतुदेम मके सुक्ष्म निगोद यकी मनुष्य परम
 चतुवाला दम न सके, ये आर्यमपातीके उत्पादक पटीत दवा
 नदुमरपतीजीने नजरमें दीखे वोही मानने का सत्यार्थ प्रकाश
 में उपदेश दिया है । लेकिन हालके जमाने का दाखला बताता
 है । होमियोपथी और चायोकेमीक दवाओं में एकम प्रमाण
 जैसे बढ़ते जाता जैसे उम द्रव्यमें दवाका प्रमाण घटते जाता-
 सो दोसो पांचसो और हजार एकम दवाओं में एक तोले में
 लाखो कौड़ों अब जो भागसे भी न्यूनदवा का भाग होता है । सो
 पृथक क्रिया जावे तो नरी आंगसे तो नहीं लेकीन दुरधीन से
 मी दिराई देना मुसकेल जब मी वो सुक्ष्म परमाणु के जुने में
 जुने रोगको अमर करता है । हमने अनुभव क्रिया है आप
 अनुभव करदेखो अगर उन दवाके जानकार विद्वान डाक्टर
 पुडो । और दुमरे दाखल यही पुस्तक में राष्ट्रपतीजी को
 हमारे निवेदन में देखो और यही प्रमाण जैन शास्त्रों के कर्म
 को सतुत करता है और ये सुक्ष्म होते कैसे सुरेंके अर्गु भागमें

असह्य जब मी रुपी बढाये और जीव भ्रष्टी गो अरुपी पर परमाणु पाच तथोके उगके आठ विभाग फर्षों में घटाये ।
 ८ अब जैसे जैसे इनपर से घुटल परमाणु घटते जावे वैसा उची गतीम आता जाव ।

१. मुख्य त्रिगोड म से २ बाहर त्रिगोड में, ३. नेर एक्ट्री जीवोंको थावर म माने जो अपनी परती से हलन चलन नहीं करसक जैसे पृथ्वी पानी अग्नी वायु अनप्यती—इनको एक्ट्री माना, क्यु क इनको एक ही मरीर दमन में आता । ४ इसे हलका होते आगे बढता जब दो इट्रीमें आता मा समर्पीय अलसीये बगैर इनके मरीर और सुख ये दो इट्रीया मानी है । ये अपनी परती सुजप हलन चलन कर सकने है । ५ इसे हलका हो आगे बढता जब ते इट्रीमें थोड़ी मफोडी जुवा वीगेरे, इनको सर्रीर, मुख और नासीका ये तीन इट्रीया मानी है । ये भी अपनी परती परमाने हलन चलन कर सकते है । और इसके आगे आयेगे रोमी सब हलन चलन करसकते और इससे हलका होत आगे बढ जब चौइट्री सो पकली, ममरे, डाम, मद्धा, पनाग, वीटु विगेरे सो इनके मरीर मुख नाक और आंखे ये चार इट्रीया होती है । यहा सो भी दु.प उठाने नवा पाप बवे तो हलके के प्रमाणमे पंचेद्र.मे आता ह्य इयम मरीर मुख नाक आल और कानये पाच सपुरग इट्रीये मानी है । इममे चोपगे पसु वीगेरे थलचर पक्षियों बगैरे खेचर और जलचर म मठलीया बगैरे और जमीनपर घसीटकर

चलने वाले साथ बगैरे, दो पाउसे चरणे इतने इतने हीगर्ह
 का कीडा घो बगैरे, और मनुष्य ममेत हिन्दे इतने हिन्दे
 या कर्म न्यून होते वैसी हलही ऊची योनी पाछे दुख दुख होने
 का भुगतत और नये बातते सबसे मनुष्य का पुत्र ब्रह्मणे
 से और बाकी रहे तपत्रय ध्यान से इटादन से नदेन इतने इ
 कवलज्ञान पाता है और मरेपीछे परपन्था के अर्थसे नदेन इतने
 है। बाकी और मी जैसे पुटल या कर्म कप इतने इतने इतने
 सुखी दुःखी रहता है। जीनोंके शास्त्रों के इतने इतने इतने
 कार पर से सृष्टी की उत्पत्ती का क्रम समझेंगे; इतने इतने
 परसे जड़ और चेतन अगर, दुमरा नाम ईतने इतने इतने
 सो अजीव सज्ञा नहीं सो उसको सुख दुःख इतने इतने इतने
 होता नहीं लेकिन जिसको सज्ञा इतने इतने इतने इतने
 उसको बचाना या सुख देना सोपुन्य, इतने इतने इतने इतने
 देना सोपाप बांधने का रास्ता मो आश्रम का इतने इतने इतने
 का रास्ता उसका नाम सवर, पापघो इतने इतने इतने इतने
 नाम निर्झरा, मनुष्यों के प्राणी के कर्मइतने इतने इतने इतने
 में जाना उसका नाम बध, सवरपाप इतने इतने इतने इतने
 मोक्ष। ऐसे ससार के जीरोंके ऊपर इतने इतने इतने इतने
 आश्रम सवर बगैरा बध और मोक्ष इतने इतने इतने इतने
 २४ प्रकार से दु ख भुगतता इतने इतने इतने इतने
 जीव विचार से जीरोंकी पहिचान इतने इतने इतने इतने
 पहिचान और दु ख किस योनीमें इतने इतने इतने इतने

ये जानने की २४ टुकड़ों के पुस्तक तीनों घमाने से बहोतमा अनुभव हो जाता है ।

९ अब जिनके नरकार परसे जगनकी उत्पत्तीका नियम मय भ्रामा गया । अब उन्हीमे ही रमण मयसता हूँ - हरेक जीवों में पाच तन्त्र भरे हय । मनुष्य मात्रम भी पांच तन्त्र हय । पाच तन्त्र गीनेर कोई समारी जगतका जीव नहीं । मारी दुनिया पांच तन्त्रों में है । उमके कुछ उदाहरण बतलाना ह । मने जो पेपरो में से सग्रह कीये वो बतलाने जाऊँ तो बडा ग्रन्थ बनता है । लेकिन अब मुझे इतना अवकाश नहीं आयुष थोडा है उम परमाने काम बहोत है औरों की मदद नहीं ।

१ हरेक मनुष्य और प्राणीका श्वाभोश्वास विगर जीवन नहीं, उम श्वाभोश्वास में पांच तन्त्र रहते हैं । स्वरोदयरा पुस्तक देगो ।

२ लुई ब्रुहनी जर्मनी का टाक्टर उमका टाद एलोपेथी हाक्टर से न मिटा । पाणी से मिटाया उममें माटी पाणरी हना बराल और मुर्यके उपचार हय । म्पोराऊ क्या और किम तरह लेना बताया हय मो अनाज में जीनों के आबलके प्रकार से मिलना आता उम पुस्तक का नाम हाइजेथी या पानी का इलाज । उमकी जर्मनी में इगलीम में अनेक आयुती हुई । हिंदी में कुन्ड आयुती हुई थी । हमारे पास भी एक आयुती थी और भी विज्ञान विगेर के माधन जमा किये थे (लेकिन लोमी-पैसे गले सेठउ + ही नेहगलनाजमीत्र.थ + ह. से बह-

लाया आप मन्थाम लेते हो तो आपका माहित्य हमारी लाइ-
 बरी में ममालकर रखेंगे आपके नामका कवाटपर जुदाबोर्ड
 लगाकर उसमें से जो ग्रन्थ मगावोगे सो हमारे घरचे से
 भेजेंगे, कार्य हुवे पीछे हमारी लाइबरी में पीछा भेजना ये
 म्म जरानी बात थी, नहा लेगये पीछे उत्तर मी न दीया) जैन
 ग्रंथामें से हाल ज्यादा प्रचार धीपाल राजाका अनुकरण करते
 हैं। उनको कुष्टका रोग हुआ था और राज मी चला गया था
 सो यही नरकारक दरेक पदके रग प्रमाणे अनाज का खोराक
 एक बरत थी तेउमसाला बीगरका जो हाल में लुइकुहनीकी
 बर्मनी वाले की विज्ञान की शोधमें बनाया मो हमारे आगे से
 चला आता ह्यै। हमारे विशेषता उस पदका वैसे रग प्रमाणे
 ध्यान करना और माला कपडे के रंगों से विशेषता है। उससे
 उनोका रोग गया था और राज्य मी मिला था। हाल विज्ञान
 शोधकों के रंगों मन्वन्धी कद्रु लेए आते हैं उसमें से एक
 का खाममथाला गुजराती भाषामें है सो लीखता हू ज्यादा उस
 पेपर से जानना पपर का नाम सेवक ता० १ सप्टेंबर १९४३
 अनेक जानता रोगामा चमन्कारिक अमर करता रंगों दवार्थी
 कगल लाओने रगोथी राहत आपवानो अखतरो। "हेस्थफोर
 ओल" नामना अमेजी मासिकमा रोबर्ट चीनले नीचे नो लेए
 लक्ष्योये। रंगोमारोगदुर करवानी अलौकिक शक्ति रहेलीछे,
 अनेक षडे आपणा अनेक रोगोंने दुरकरी सकायछे। प्राचीन
 कालमा लोको रगने पुर्ण विज्ञान मानता हता। आपणे पणतेनो

अभ्यास करीने रोगीनो उपाय करमा मां तेनो उपयोग करी शक्यै । एपुरवार थइ चुकयुके रगनो घटतो उपयोग करीने आपणे आपणा सरीर नेफरीथी बलवान बनायी शक्यै छीये-रग आज्जे जेटलो आउश्यक अने महत्त्वपूर्ण पदार्थ थइ पढयोछे तेटलो तेकदीपण मनातो नहनो । लस्कर अनेमहेरी बने बर्गना माणमोए जेओ गोलाओना घडाकाने लीथे स्नायु रोगना रोगी बनी जापछे रगोनी असर्था नयी तदुरम्ती अने बलमे-लभ्याछे । आपणे बघाए रगोनीज दुनीयामा एवाज रगोथी घेराइने रहेवु जोइयेके आपणा सुर अनेस्वास्थ्यमा सहायक बनी सके । रगनो पुरता उपयोग करवाथी दुनियानो वातावरण अने आपणा रुपरग बदलाई सकेछे । देखो लुइकुहनी का तत्वोंका उपचार । पीछे वालोंका रगोका उसमे कपडे वैसे रगके पहनने से रोग गया । श्रीपाल राचाने रहोव मा रगोंपर पदोंपर और यत्रों पर ध्यान किया था । ये नकार का भेद ।

३ वायोकेम्रीक दवा बारे रासीपर असर है । गुण व्याधी हजारपण औषध बार-बारे रासीके भी जुदे जुदे रग है । रोगके नीदान मे जीभपर रगोंका देखाव उसपर चीकित्सा होती ।

४ सुर्यके किरणों को जुदे जुदे रगोंके चोतलमे लेकर जुदे-जुदे रोगोंपर चीकित्सा होती है, इसका नाम रगरसायन । इगलीसमे क्रोमोपथी अमेरीकामे इसका प्रचार ज्यादा होरहा । गाधीजी भी नेचरल उपचार ज्यादा पसन्द करते थे । सुर्यके किरणों मे भी तत्वोंका रग हय । कोई बसत बरसाद पडके

७ सो योगीलोक ये तत्त्वों की भाषामें मोना सीधी घनाते, दोरता दो पीयला चंदा वरणा चार चेला रघों खीचडी तो भुल न पारी ये योगियों का विषय ह्य ।

८ ये नवकार ये नव आरु अजय ह्य । चाहे उतना गुणकार से बढाते जाय तुठता नहीं ।

९ फेर ये नव आँकसे नवफोटे में पदरीया और घीमा यत्र बनता जिममें अनेक सिद्धियां उत्पन्न होतीं । 'जिमके घरमें घीसा उसका घर भरे जगदीसा' ऐसी बहलावत है ।

अब हम नवकार में प्रथम उत्पत्ति का विषय बतलाया पीछे मारा जगत इसीमें रमण दुकम बतलाया । हमका जितना फेलावा करो उतना रुम है । जितनी नरी सोघखोल हुई होगी सब जैनधर्म के और ये पाच तत्वों के जदर का ही विषय आवेगा । जुने वखतके हाडपीजर रके मिलते सो जैन शास्त्रोंमें बतलाया । आगे मनुष्य का शरीर बढा और आयुष भी ज्यादा । दिन दिन शरीर छोटा और आयुष कम सो बात मिलने आती । जैनके वर्तमान तीर्थंकर २४ इसकाल के अगले भूतकाल के भी २४ नाम विद्यमान ह्य । ऐसे अनादी छ छ आरेक कालमें चौतीस होते गये । वैसे जैनधर्म अनादी और पाच तत्व अनादी सिद्ध होते हैं । और हिंदू धर्म की उत्पत्ती बतलाते मो तत्र उम वखत ये और वरसों की गीनतीमें आता है । जैन सिद्धान्त ये ससार को दु खमय माना है । जितने जितने तत्वोंके पुद्गल घटे उतना दु ख कमती । घर ससारम इच्छा रखना ये तत्वोंके प्रकार

हय । छोटी बालक अवस्था मे विषय कुछ नहीं तब उनको
 कुछ दुःख नहीं । लेकिन उमर में आता विचार उत्पन्न होता ।
 स्त्री पुरुषको एक दूसरे की इच्छा का विकार होते ओ विचार
 तप्त करने लगन मृथा वगैरे घने और उसमें आनन्द मनाया
 लेकिन जैन सिद्धान्त प्रमाणे दृष्टात । जैसे कडक मनुष्यों को
 शपथरोग याने सुजली का विचार हुआ । उममें पीठमे राज
 आने लगी वो हाथ न पहुचने से नदीमे कांभरे थे वहा जाकर
 कांभरेमें आलोटने लगे यानेपीठ घमने लगे उस घर्षण से राजमें
 टेप आने लगा उतनेमे कोई वैद जगलमे से दवाओंकी वनस्पती
 का मारा वाधके वहां से जा रहा था । उसके हाथमे चिरायता
 मिंगेरे की लकड़ियां देरी । जद वैदसे पागने लगे कि ये लक
 दिया हमको देवो तो हम सुजली सुजायके आनन्द पावे । जब
 उमने वहा सुजाने से आनन्द मालुम पडता परतु भविष्य मे
 नुकमान फारक हय । में आपको दवाका कार्डा पिलाके निगेगी
 बनादेऊ सो नात उनोंको पसद न पकी उनोंन कहा ये जाने
 से हमारा सुजाने का टेस चला जाये सो हमारे नहीं करना । सो
 जैनमत वो रोग मिटाने वाला वैद सरीखा मानना-उनकी
 कडकी दवा सो ससार से त्याग श्रुती आत्माको अतमे कल्याण
 कारी होते मरसमार के दुःखो से छुडायके परम सुख धाममे
 पहुचाती और वो रोगको सुख मानने वाले जिमने ससार को
 सुख माना सो ससार के जन्म जगमृत्यु और आधी व्याधी
 उपाधी वगैर अनेक दुखों के भुगतने वाले बनते हैं । जन्म

दुःखं जरा दुःख मृत्यु दुःख पुनः पुनः अनेक आधी व्याधी
 उपाधी दुःख समार समारे दुःख तस्मा जागृत जागृत ।

अब इस दुःखोंमें से किमताह पार निरलके परम सुखके
 घामको पहोचना नयवार भ्रममें ही। जब आत्माके ऊपर से तत्त्वों
 रुपी कर्मोंका बोझा याने नकासा कचरा या मैल हटवाने से उम
 आत्मा को शुद्ध ज्ञान दर्शन प्रगट होते । जब उमने अभीतरु
 जो मुखकी वस्तु मानके उसमें याने संसार म फना था, उमको
 अब दुःख रुगी हय ये मच्चा मान आता है । और उसमें से
 निकलने को नषपद मे से शुद्धज्ञान दर्शन ६ ७ पद है जो जाने
 से फेर और ८ पद चारित्र्य ग्रहण करता है सो माधुपद फेर
 ९ पद तपसे कर्मको जलाना । तप तप ध्यान योगमें आता सो
 श्यष्टमेद है । जीगरु पंचम प्राणायामताके मध्य प्रकार है सकल
 सिद्धके घाम रेचक पुरक तीमरो कुमक भेद पीछान शातीक
 सप्तता एकता लीनमाष चीत आन लीनदशा व्यापहार थी होत
 मपाधी रूप । निश्चयसुं वेतन ये होवे शिउपुः(मुक्त)भुप स्वासाकुं
 छतिस्थिर करे ताणें नहीं लीगार मुरुषध दृढ लायके करे
 बीज सचारा वायु पाच शरीरमें प्राण समान अपना उदान वायु
 चोधे । कछो । पंचम अनील अध्यान । प्राणहिये पुन सर्वगत
 तनमें रहत समान आधार चक्र गती जार्णायें तीजो वायु अनाप
 उदान वासह फठमें सधीगभीए अब्बाष पच वायके बीज पुनः
 पच हीयेइम आन ऐ, पै, री, वली, कर्ली सुधी पचबीज पाधान
 इनके गर्भीत भेदको कहत न आवे मान पच बीज सचारा थी

अनहद धुनजे होय । निर्गम भेद स्वनीतणो योगीश्वर लहेकोय
 वरण मात्र इणरीजके कमल कमल स्थित जाण । भिन्न-भिन्नगुण
 तहनो शास्त्र थकीपन आण, सकल सिद्धी इणमे वसेमय लब्धी
 इणपाहि वेतीक आजहु सपजे वेतीक तो अय नाही । वरण
 नामी मे सचरे मोहम वह उद्योत । अजप जाप ते जाणीये
 अनुभव भाव उद्योत । नामी थी हीये सचरे तिहा रकार प्रकास
 मन स्थिरता तामे हुवे अशुभ सकल्प होय नास । नामी पास
 हे कुडली नाडी वरु नाल हे ताम पिठाडी दमम द्वारका
 मारग सोई । उलट घाट पावे नहीं कोई मुद्रा पच बध त्रीप-
 जाणो आमन चौरासी पहिचानो । ये ज्यादा विषय हमारे योग
 ध्यान के पुस्तक में ज्यादा समज पूर्वक आरेगा ।

अब मुख्य मुद्रा तत्त्वों या करमों को आरम्भ परसे हटाने
 को ध्यान के लिये । छ या सात ध्यान बताये उनको कोई
 कोठे भी कहते हैं । १ स्थान गुदाके पास नाम मुलाधारचक्र
 पाखडी ४ अक्षर व श प. स २ स्थान लींगके पास नाम
 स्वाधीष्ठान चक्र पाखडी ६ अक्षर व भ. मं य र ल. ३
 स्थान नामीके पास नाम मणीपुर चक्र पाखडी १० अक्षर
 ह। ट ण त. थ द ध न र्प फ ४ स्थान हृदयमें नाम
 अनाहत चक्र पाखडी १२ अक्षर क ख ग घ ङ च छ
 ज झ ञ ट ठ ५ स्थान कठमें नाम विशुद्धाक्षय चक्र पाखडी
 १६ अक्षर अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ लृ लृ ए ऐ
 ओ औ अं अः ६ स्थान ललाट नाम आज्ञा चक्र पाखडी २-

ह. क्ष ये तत्त्वों और रगोंमें हय । उम उम कर्मों को ध्यानी ध्यान से हटावे जवसे हटाये और तपसे जलावे इम परमाने कर्मों को हटाने में साह्यकारी हय । सारे जगतका सार नव पदों में भरा हय ।

जय मनुष्य आत्मा शुद्ध दर्शन ज्ञानको पाता तब चरित्र ग्रहण करता उस वस्तु की उनोंपर कर्मोंका बोझा ज्यादा लपटा रहता वो भी कालापन फेर ज्ञानपर भी ज्यादा आछादन होनेसे अग्रा उम कारण से कालापन मानाजाय । फेर तपजप ध्यान द्वारा ओझा होताजाय सफाई चढती जाय बैसी ऊची पदोंपर आवे और रग बदले काले में से हरे पने में आवे । और सारे दुनिया को पढ़ाने लायक ज्ञान पैदा होते उषाध्याय पदपर आवे । फेर तप जप ध्यान द्वारा कर्मों का पडल खसकते । साफ होते पीलापना कचनगर्ण बने और सारी दुनिया को उपदेश देने लायक और बाद विवाद में समझाने लायक बने फेर वो भी पडलसाफ हो जाये । आठ कर्म ज्ञाना वरणी, दर्शनावरणी, मोहनी, अतराय, नाम, गोत्र, आयु, वेदनी

१ २ ३ ४ ५ ६ ७ ८

ये पाच तत्त्वोंके भेद आठ कर्म छ लेश्या भी रगोंसे बनती । कृष्ण नील कापोत पीत पद्म शुक्ल जैसे ऊच भावना बने

१ २ ३ ४ ५ ६

नये कर्मोंको आने न देवे जुने कर्मों तपजप ध्यान द्वारा खलास करे जब पहिले चार कर्मोंका नाम होनेसे केवलज्ञान सफेद-

वर्ण आता है उनको ही सर्वज्ञ कहते । उनको सारी दुनियाके उपाधीलय, मय जीभोका पुठने आये अनेक भयोका हाल सुख दु ख छुटनेका रास्ता बीगेरे, यतावे । अनेक शक्तियों पैदा होती । इवताओं करोड़ों सेरा में हानर होते । अनेक प्राणी बहा आने वाले को जन्मान्तरों का बैर मिटाके शाति पाते । ज्यादा हपारे श्री पार्श्वनाथ चरीत्र देखो । बहा से बाकी चार कर्मोंका भी नाम हो जाने से सिद्ध पद लालर्ण परम ज्योती मिलजावे । सार समार के दु ख से छुटजावे ।

सो इस नमस्कार नवपद से जगतकी उत्पत्ती उसीमे ही रपण उसीमे अनेक दुःखके कारण उसमे से छुटकर मुक्ति पानेका रास्ता बहोत सक्षेप से यताया । विस्तार करने जावे पार न आवे मूल विद्वान् वर्गको समझने को इतना काफी है । अब 'नमस्कार नवपद दरेक का गुण कोई भी धरम वाला इस गुणकी मान्यता से बाहर नहीं जा सकते ।

१ नमो अरिहताण- अर्थ 'नमो' = नमस्कार हो, 'अरि' = शत्रुको, 'हताण' = इनने वाला । इसका सुला अर्थ होवे. "शत्रुको मारने या जीतने वालेको नमस्कार हो ।" हिन्दुओंके दसों अवतारोंने शत्रुको मारने के लिए अवतार लिया जगजाहिर है । लेकिन वो एक नाम है । यहाँ इसके पेटे में जितने बलवान हुवे, लाखों, करोड़ों अब जो पार सिंगर के इनमे आजाते हैं । वास्ते ये पदकी तात्त्व उनसे एरुदम ज्यादा होती है । शत्रुसे हारने वाले को कोई धर्म नहीं

मानेगा। २ नमो सिद्धाण, अर्थ नमस्कार हो सिद्धोंको। ये पदको सारा धर्म मारी आलम मानती। ३ नमो आपरियाण, अर्थ नमस्कार हो आचार्योंको। ये भी आचार्य दरेक धर्ममें है और मानते हैं। ४ नमो उपाध्यायण, अर्थ नमस्कार हो उपाध्यायोंको याने पढ़ाने वालेको। दरेक धर्म में है और मानते हैं। ५ नमोलोण सद्यसाहुणं अर्थ नमस्कार हो लोकरूँ सब साधुओंको। ये भी दरेक धर्ममें साधु या सत या फकीरके नामसे प्रख्यात है और सब धर्म मानते। ६ नमो नाणस्म अर्थ नमस्कार हो ज्ञानको। इस पदको मारे धर्म क्या मारी दुनिया आम्तीक और नास्ती होने भी अपनाया ह्य। ७ नमो दमणस्म अर्थ नमस्कार हो दर्शन याने देखनेको। दरेक मतवाले ने अपनी लाइन से देखा है परंतु वो पद तो मजुर करने ही पड़ेगा। ८ नमो चारियस्म, अर्थ नमस्कार हो चारित्रको। दरेक धर्म वाला अपने अपने मतानुसार चारित्र पालना मजुर करता है। ९ नमो तपस्म, अर्थ नमस्कार हो तपको सो तपश्चर्या दरेक धर्ममें कोई न कोई रीतसे लिखी है।

अब ये नवपद के मूल पांचपद उमका प्रथम अक्षर असि आ उ सा से ॐ बनाया ह्य और हीं में चौबीस तीर्थ-द्वार समाते, वास्ते उम नवपद के यत्र मडल में ही दिया ह्य किम तरह समाये वो ग्रन्थ टुडने से हाथमें न आने से विवेचन नहीं किया। अब मिलने से जैनमय जगनमें दिया जायेगा।

मालाके १०८ मणके का कारण, वो भी सिद्धान्त परमाणे ये

पाच पदके गुण हय । अरिहत के १२, सिद्धके ८, आचार्य के ३६, उपाध्यायके २५, माधुके २७ इम परमाने १०८ हुवे इम परमाने जैनधर्म असल पुरातन हय । इसीमें से निपरीत करणीसे अलग अलग फाटे फुटते गये ।

बड़े फाटे की उत्पत्ती-भरत चक्रवर्ती के घरतमें इनको धर्म ध्यान करनारे के हिमाच से पौमत रहे । परवारा भोजन मिलने से सख्या बढने लगी । जब परीक्षा कभके धर्म ध्यान की क्रिया में पाम होने वाले को और ज्ञान दर्शन चारित्रमय हय ये ओलप्राण के लिये तीन रेखा की जनोई पहेनाई गई । और माहन नाम से प्रसिद्ध हुवे । मा=नहीं इन=हननारे. नहीं मारने वाले, जीव हिमा नहीं करनेवाले । तब पहिले नरमें साधु हमरे नर मे साध्वी, तीमर नर मे ये ठेठ नवमें तीर्थङ्कर तक माने जाते रहे । नरमे तीर्थङ्कर के कुछ टाइम बाद साधु साध्वी का वश अटकजाने से धरमके लिये इनोकी पुछ परछ होने लगी ।

जब इनोने मोका देखकर अपना स्वार्थ साधते जहाँ वहाँ हमको देने में पुन्य मानते, लोकों और राजा महाराजाओं के पसदगीका ससार मे डी सुख मनाया, कमलासन पर चतुर्मुख ऋषभदेव भती निकला था उसको ब्रह्मा ठहराया और ये माहन में से ब्राह्मण बने और उसमें ससार पक्ष और स्वार्थ का फेर फार हुवा ईश्वर को कर्ता, फेर ईश्वर को मार उतारने अपन सरीखे रखडते मटकते मनाये । जैनोके २४ से मेल

लानेको मात मनु आठमें ऋषभदेव ऐमो खींचतांचके २४ का मेल किया उसबखत कोर्ट मामने पढ़नेवाला न होनेसे इनोका मनोकल्पित सर्पत्र फैल गया । फेर जैनके १० में तीर्थंकर हुने इनोको फेर त्याग मार्ग बतलाया सो समर्ग पाने वाले उममें जाते लेकिन काल प्रमाण जीयोका समार तर्फ झोंक ज्यादा होने से समय समय पर तीर्थंकर होने गये जैसे बोधदाते उमको अपनाने वाले निरुलते गये, तब भी वो पीठ ज्यादा रही और उसमें विद्वान होते गये, उनोंने फेर फार करते फाटे फुटे पुगण और स्मृतिया भी हुई । लेकिन अब सायन्स विज्ञान के जमाने में परीक्षा होनी चाहिये । अभीतक जैनो के पिरुद्ध इनोके शास्त्रोंमें बहुत बनावटी बात मालुम देती है । उसका एक दाखला ममयोचित धारके लिखता ह । ये बात १४५ बरस आगे की हय । हम ग्रहस्थाश्रममें थे, जब जामनगर से कच्छ की ओट में भुज जाने को जा रहे थे और हिंदू धर्मके पैरागी देशमें माधु कच्छ नारायण सरोवर की यात्राको जा रहे थे । ओटमें अरम परसवार्ताशाप में आप जैन हय; हमारे शंकराचार्य ने जैन के महान आचार्य से वाद विवाद कर के जीत लिया तब उनकी स्त्री कहने लगी उनोको जीवनेसे आपकी पूरी जीत नहीं होती, मैं उनकी अर्घमिना हूं मेरे को भी जीतो जब जीत मानी आयगी । शंकराचार्य बाल ब्रह्मचारी थे-स्त्रीका बहेगर जानते नहीं थे-उमसे उनसे छुदत पागी । फेर कोई राजा मरगया अब अपना सरीर एक कोटडी में लापना से सभालने का अपने

शिष्यों को बहके अपने को राजाके शरीर में प्रवेश किया । और
 उमड़ी राणीसे स्त्रियोंका व्यवहार सीसके फेर अपने शरीरमें आकर
 आचार्यकी स्त्रीसे बाद करके उसको भी हराया । ये अपने शास्त्र
 बात उसने कही । जब ऐसी अनेक बात लिय चुके हैं तो ये
 वाच बांचकर नैनोपर छोटा आक्षेप करने तयार होते । उसमें
 भी कोई सत्य पाजाता तो जैन बनजाता । जब फेर 'हस्तिना
 ताड्य मानोपि नगच्छति जैन मदिरे', ये लिखना पडा । जैसे कोई
 जुनी दुकान में से फुटकर भागीदार या नोकर निरुल के सामने
 नयी दुकान लगावे, तब जुनी दुकान में ग्राहक को न जाने के
 लिये छोटी रीतसे बहेकावे-ये हिंदू और जैनका कीसा हय ।
 कारण जैन लोक स्त्रीके सन्धमे महा दोष मानते धर्मचुस्त ग्रहस्थ
 भी ब्रह्मचर्य का निषम करलेते साधु को स्त्रीका पछा लु जाय
 जब भी दड आता हय तो आचार्य को स्त्री कहा से आवे ?
 जैनोका त्याग मार्ग उममे समार मार्ग कहासे लगाया ? कितना
 हद बाहर का जुठाना लिया हय-ऐसे जुठ चलाने वाले जगत
 के और ईश्वर के संपूरण गुन्हेंगा हय और स्वराज मिलने
 अन्याय करने वाले अधिकारी भी इनकी जाच होनी चाहिये ।
 और सरकार जब पाकिस्थान में मुस्लिम वस्ती ज्यादा होने से
 हिन्दुओं को अन्याय होने से सरकार उनको मदद दे रही जब
 यहाँ हिंदू धरमवाले जैन पर अत्याचार करे तो सरकारने जनों
 को टेका देना चाहिये । रतलाम सरीखा न होना चाहिये ।
 जैन धर्मका विधान एक दूसरे से उलटा होने से जैनको हिंदू

दंटे में लेना चाहिये इतना लिपके मेरा लेग बन्द करना छ-
 जच इमफानी दुनियापर मोतुमा पंजा पमर रहा और किस तरह
 सपटता उमपर से दुदत के घर अन्यायमा दह भुगतना
 पड़ेगा, ये मपजके अन्याय करने प्रभुसे टगे पर्योकि इसमें छोटी
 बड़ी उमर नहीं दरता अकम्मात लेजाता है उम रम्यत आगे
 से क्रिया हुआ घरम और अघरम माथमें आता है। जानो है
 चोरूम मानो कोई अमरपटो लेने आयो नहीं।

मोनरी से यनीरजी

कालका अजर तडाकाये, तु क्या जाने लडका वै ॥ टेरु ॥
 नचमी परगये दममी परगये परगये महम्र अथ्यासी ॥
 तेतीम कोटी दव परगय। पड कालकी फांसी ॥१॥कालका०१॥
 पीर परगय पेगम्रर परगये। परगये जंदा जोगी ॥
 जती सती मन्यासी परगये ॥ परगये पैद न रोगी ॥काल०॥२॥
 तीन लोरुपर छत्र तिराजे। मो लुटा कुंजविहारी ॥
 कहत कमीरा मो मी परगये। रेपत कौन विचारी ॥का०॥३॥

सतोकी चानी

कालका क्या भरोमा है न मालुम कब आवेगा ॥ घरा रे जायमा-
 लमकर, पकड तुबमो ले जावेगा ॥१॥
 तीतर को वाज पडहे है, मेढकको साप गलता है।
 चिन्ली चुहा जपटती है, काल ऐसा टबावेगा ॥२॥
 कहा है वैद घनरतर, कहा लुखमान जहा में है।
 मिलाया साक मे उमको, तुक्या पाकी रहजायगा ॥३॥

कहा है बादशाह चानर और सिक्कर कहा है गवराणा सामता

और नामधारी बडे बडे कल्दर ॥४॥

एसे भी न बचने पाये तो तु क्या गर् वराता है ।

जैसे मिह हिरन को भपटे वैमे तुझे काल झपटगा ॥५॥

नहीं माता पिता भाद आ तुजको न छुडावेगा ।

नहीं न्याती नहीं गोती आ तुजको न बचावेगा ॥६॥

चने नहीं जोर जादुका चले नहीं जोर बाजुका.

पडे तिलोरुमे डन्का तु जाक कहा उपावेगा ॥ ७ ॥

अर जीमकी धपक आगे कापते च ड जोर सुरज । नाकी न रह

गये कोइ मी ओरज । फीर तु क्या अमर मनाता है ॥८॥

करो मत्य धर्म क्रीया जानी, हटो मय पापोंसे प्रानी ॥ तो मिले

मुक्ती पहारानी तो फीर काल भी ताप छावेगा ॥९॥

इम उपर से वाचने वाले को हमारे गुरुजीओ की विद्वता

हा ख्याल आजायगा ये नव पद नमोटी रूप (छे) है । इसमे

जेनोंने एक दो के तीन पद अनुमान से घटाय के इस पर-

ाने ओर मी समज लेनेका लीखा है, लेकिन दरेक पदका

ग जुदा जुदा है । सो इम परमाने कैसा समजा जाय ? इस

र से अनुभव होता है कि आप ही पूरा वर्णन करने में अम

र्थ है । ऐसा समजा जाता है ।

और सुलासे औरों ने भी अपनी अपनी कल्पना शक्ती

ओर बुद्धो पुरंरु दीये है । उममे आचार्य श्री हरीभागरसुरी

का सबसे बढ़कर है । लेकिन फकत मु वाकरासे आचार्य

श्री तीव्रसुरी का हमारे से मिलना आया है । उससे हमारी
 मान्यता को टेका मिलना है । ये भी जती पट्ट परशर से
 आये हुये है उससे पुगनी हर्कावत जानते हैं फिर ध्यानी
 भी है और हृष भी जती पुणे में रहकर आये फिर इतिहास
 सोधने का पहिले से शुरु था उससे ये बात का जानपणा
 ओर सामन देवदेयी की कुछ सहायनी है और उसी से और
 पुस्तकें और पत्रिकाये भी छपी है इनके सुन्यासे से सारी
 दुनियां और चउद पुरब का सार तो क्या लेकिन सारी दुनियां
 इषर्म पांच तत्वों में समाती हय । दरेक धर्म आमतीक ओ
 नामतीक को सबको मानना पडेगा—फेर योगोद्वहन हालके
 उपधान को घटाते है परतु पहले साधु जगल में विचरते थे
 जत्र यहा अभी सरीखा मालपाणी कहां खाने मिलता था
 लेकिन ध्यान के योग कृशी योगद्वहन रहते थे दाखला
 (अष्ट भेद है जोग के इसी पुस्तक पाने ६० लाइन १२ से
 देखो) और उसी से ही लगधीयां और ज्ञानप्राप्त होता था अर
 सहैरों में ध्यान के बदले ऐसे वालों की गुणामद चर्नी ओर
 नामना करने का मोह बढ़ा ओर पचसाण में नीची में लुखा
 खाने के बदले निविपाना बनाय के माल पाणी खाने सीये ।
 ऐसी और भी बहुत पोले घुम गई हय जो हटाने की बहुत
 जरूरत हय सोमेहरनामे की कुछ नफल आगे आवेगी उम
 पर विचार करे (जैनी श्वेताम्बर लोक) ओर हमारे धरम की
 सचाई सायन्ससे घटाता हु पानीमें हमारे सिधांतोंम असम्प

जीव धताये सो प्रत्यक्ष देखने वाले जुठा माने. लेकिन पत्र 'श्वेताम्बर जैन' १ जुलाई सन १९५२ का लेख (पानी छान कर पीजीये, वर्तमान समयके सुप्रसिद्ध विद्वान बेता भी केप्टन स्वर्णोत्सवी साव ने दुरवीन) (सुक्ष्म दर्शक यन्त्र से) देखकर फोटोलीया है थी० के० स्वर्णोत्सवी सा० ने इन सुक्ष्म जंतुओं की सरूपा पानी की एक छोटी सी घुद में ३६४५० बतलाई है। सिद्ध पदार्थ नाम की पुस्तक जो इलाहाबाद गवर्नमेंट प्रेस से प्रकाशित हुई है उसमें केप्टनमादेवका पुरामत और धीत्र मी दिया है (जैन मित्र से)

और हमारे नबकार के पांच तत्वों के विज्ञान को हाल नवी सोर्षों में भी टेका मील रहा हय उनका उदाहरण. पेंपर गुजरात समाचार ता० २५-१ ५८ का लेख आ सदीनो सउयी मोटोघरतीकप (रोइन्टर) मोस्की ता० २३ मा सदी नो अत्यार सुधीनो मोटामा मोटोघरती कप मोंगोलीयामा अलताई पर्वत मालामा बन्योछे जेने परिणामे केटलाक बघारे स्थलीए आठ आठ माइल लांबी एवी नदीयो बनवा पामीछे एस्थलनो देखाव पृथ्वीनी बालयाबम्हामा ज्यारे पधु बायुमायी घन रूप बतु हतु ते बरत ना जेरो हतो । ये अपने नबकार (नवपद) पांच तत्वों में घटायें हय (घटते हय) ये असह्य करती की अनेक जुगों की केरली ने बतलाई हुई बातें को हालका विज्ञान मी टेका दे रहा. ये जैन धर्म की सच्चाई ओर अनादीपुर शार हो रहा. है केर यही पुस्तक के पाने १ में

(यही पुस्तक के पाने ६ में) इतिहास प्रेमी ज्ञान सुंदरजी
 सो पीछे से देवगुप्तसुरी नाम से प्रसिद्ध है-उन्होंने श्री पांडी
 सषको उपधान भारत के उत्तर में पाने ९ के मथाले लीखान
 है। वर्तमान में जो उपधान चलता है इसके लीये मेरी मान्यता
 धात्र से ३३ वर्ष पूर्व मेझरनामा में व्यक्त करदी है वहां से
 देख सकते सो उस वसत तो वो पुस्तक हाथ न आया लेकीन
 स० २०१४ माहा महीने मे मु० अपदावाद में मूनीराज हम
 विजयजी से श्रावक माणेकलाल माफत प्राप्त हुवा उस लीये उनों
 का आभार माना जाता हय उस पुस्तक के पाने कुल ८१ में
 उनोंने श्री सीमघट स्वागिको विनतीरुद चीठी, इडी पेठ पर
 पेठ ओर मेझरनामा ढाल १ से ३१ तक लीख के पुरा कीया
 है लेकीन हमारे को हमारे लेख के मुदासाथ लीया कारण
 ज्यादा टाईम ओर श्रमकाश न होने से फरत ढाल ३४-५-
 ६ ७ ओर २३ २४ का उतारा करके वाचक वर्ग को सतोष
 मनाया हय उसमें भी गुणग्राही सत्य सोध के ग्रहण करेंगे यही
 विनती है कारण शास्त्र में चार दोष छोड़ने के बताये सो
 पहीत वीरविजयजी महाराज उनोकी बनाई हुई ९९ प्रकार
 की १० पुजामें चार दोषे क्रीया छुडाणी योगावचक प्राणीरे
 वो चारदोष दग्ध सुन्य-ओर अविधीदोष. ओर अतीप्रवृत्ती-ये
 क्रीयाए लाम के बदले हानीकारक होती है. अमृत क्रीया के
 बदले विष ओर गरल क्रीयाए बनती है. ओर तपजप ध्यान
 मोक्ष जाने की लाइन प्यान मुदाउडा के मलती मलती नर्व

क्रीयाए चला रह्य इससे निन्दवों के मिलान म मिल सकने
 यहा ग्रथ बढनेसे इनोंका विवाण गुलासागर चिदानन्द जी के
 स्वरोदय प्राणापाम ध्यानमें देना होगा । चैत्यरामी अधिहार
 (मेकलनामापाना १०-१२ से) सुत्र महानीसीय के आधार से

दुहा

दुष्टकाल अतिआकरो-नमीले फासु आहार
 नीचैल मनमुनीराजना लोपेपर्यादकार-
 फेई गया परखडमा-राखवा सयमसार
 जे पाछल मुनीवर रक्षा-मुण तेना सभाचार

ढाल ३

पार तथा पाछल रक्षा जेणे कीघोहो जिनचैत्य (देहरा) मा वास
 आठमो व्यासी बपे. सासन हुओहो जाणे भरुमीरास मुणो
 सीमधर० ए आकशी ॥ १ ॥

तप सयम दुरे धर्यो दुर धर्योहो साधुनो आचार
 बाडा बाण्या आपणा तुम्पाहो लामी अपरवार सु० ॥ २ ॥
 द्रव्य लिगी द्रव्य राखवा माहीहो देव द्रव्य दुकान
 नेहीत द्रव्यने वापरे अंधा अंधहो मन्व्यो अज्ञान सु० ॥ ३ ॥
 वाम कर्यो मुनी चैत्यमा गृहस्थहो छोटीसार ममाल
 द्रव्य करे मुनी एरुट्टु देवनामेहो बीजारीजाल सु० ॥ ४ ॥
 धर्मशाला ने उपासरा नवा चैत्यहो बाध्या अनेक
 पालीकीराखी आपनी पोतेहो करे जेनी देख रेख सु० ॥५॥

कल्पित क्रीया बनावीने सावध होकरेउपदेश
 अंजन शलाका प्रतिष्ठा विसे सयम न राख्योलेश ॥ सु० ॥ ६ ॥
 काव्य बनाव्या पुजातणा सावध न जाणे शक (शुद्धा)
 माया ममतामां पड्या-हायी हो जाणे पडयोपेक ॥ सु० ॥ ७ ॥
 मृदंग ताल बजाचना-कँइ खातुँहो नित्य चंगा श्रेष्ठ माल)
 गादीतकीया पिछ्खाववा-ओढवा हो दुसाल साल ॥ सु० ॥ ८ ॥
 रोसनी करावे रातना मंदिरमां हो उचावे लोरु ॥
 निरकुश दयाविना-धर्मनामे हो करे प्रचार ॥ सु० ॥ ९ ॥
 पहाउवणी रचना करे-गाजे वाजे आवेने जाय ॥
 धाम धुम करे घणी सासन हो दीघोलोपाय ॥ सु० ॥ १० ॥
 सध साथे करे जातरा साध्वीयोहो साथे चाले नार-
 धर्मनामे अधर्मनु पासत्या हो माडयोप्रचार ॥ सु० ॥ ११ ॥
 तप तैलादी करानीने उजमणे हो छेवे रोकड दाम-
 गौतम पडघो पुरामनो सु लसुहो जाणो आत्मरामा ॥ सु० ॥ १२ ॥
 उपधानना नामधी-नधी नवी हो, क्रीया दीधी थाप-
 रुधीया छेवे रोरुडा-सासनने हो लगाडयो पाप ॥ सु० ॥ १३ ॥
 साधुना उपासरे हो स्थापे हो धीतरागीदेव-
 अठाई ओछव करावता नाटकीया हो पाढी खोटी टेवा ॥ सु० ॥ १४ ॥
 ईत्यादि सक्षेपधी विस्तारे तु जाणे नाथ-
 सो नर्प सुधी चालीयो मोटो हो चैत्य वासीनो साया ॥ सु० ॥ १५ ॥
 देव गुप्त देवद्विगणी केई मुनीकरी सासनसार
 हरीमद्रसुरी हुआ केई मुनी हो कर्यो क्रीया उद्धार ॥ सु० ॥ १६ ॥

अत्र न त्रिपिर इठावीने-त्तप संयमे हो थपा उजपाल-
 पुस्तकाहूट आगम कर्पा-जेणे जाण्यो हो काइ पडतो ङाल सु० १७
 स्वप्न काल क्रीया रही चैत्यवासीनो बध्यो परिवार
 तेगो वर्षो प्रभु पक्षी, चोरासी गच्छना सुणीये हो

समाचार ॥ सु० ॥ १८ ॥

गञ्जना नाम, जुदा पडया माहोपाह हो घणो घर्म मनेह
 पण कनीयुगी जायता तेदना हो समाचार छे एह ॥ सु० ॥ १९ ॥
 मयाचारी जुदी जुदी-जुदा जुदा होसहुना गेनाण (एथाण)
 मदिर उपासरा जुदा जुदा-जुदा जुदा हो श्रावक पीठाण सु० २०
 ग्रथ रचना जुदी जुदी पाकी बाधी हो पोतानी पाल
 का निंदक कदागृही माडी वेठाहो ममतानी पाल ॥ सु० ॥ २१ ॥

सिद्ध सुरी 'बलमसुरी जगद्ध हो हेमसुरीद्र
 पासत्पानु' मद सुरता. भुङ्डल हो विचरे सुर्गांद ॥ सु० ॥ २२ ॥
 कुमारपाल प्रतिगोधीने-जैनधर्म कीधोहो उद्योत
 देस अठारे दयापलेरे हीर सुरी हो अकरर बोधान ॥ सु० ॥ २३ ॥

गछ तणा हगडावणा पक्षा पक्षी हो माडी दुकान
 लींगचारी सीथील थपा वामन्या हो माच्यामस्तान ॥ सु० २४ ॥
 विक्रम पंदरसे आठमा-लुपक लोडहो फीधु तोफान
 पदसे एकत्रीसमा चाली हो लुपक दुकान ॥ सु० ॥ २५ ॥

प्रतीमा उत्थावी पापीये आगम मान्याहो एकत्रीस
 वृक जेव मालकीया करे-दया दया हो पाडे हस
 श्रीस ॥ सु० ॥ २६ ॥

एक बाजु यती_शिथील यथा धीजी बाजु हो लुपक नोजोर
 मत्य विनय सत्य राखता लुपकना हो. कीला दीपातोड ॥मु०२७
 वीर परपरा मत्पनी विजयधी हो सरेगी नाम
 छुपकू थी टुढकू थया आगल लमुहु वनेनाकाप ॥मु०॥२८॥
 सरत सतर आठमां लदजी हो लुपकनो साध (साधु)
 मोट्टुं बांधी ने निरन्घा लींगपलटी हो कीघो उन्माद ॥मु०२९॥
 सत्य मार्ग योडो चन्यो वभ्यो हो वामत्वाप्रचार
 प्रवृती एतु वने तणी योढामां हो घणा समाचार ॥मु०॥३०॥

ढाल ३ नो ताशर्य

जेचै-यवार्सानी प्रवृती लखीये नेषां काइ आशर्य न वामतु-
 जी वषाकर्माधी-छे-परतु खाम लघमा राखतु की ते प्रवृती
 अपारामां न आराजाय अगार काइ होयतो तरत काठी मुक-
 वानुं प्रयत्न करवुं ।

आचार्य अधिहार. पाना-१३ थी १५ सुत्रोकेनाम
 कीमआधारसे घृहत फल्पसुत्र गाथा १. २ व्यवहारसुत्र
 गाथा ५- ३ आवश्यकसुत्रगाथा ६- ४ दशाश्रुत स्कंध-गाथा
 ६- ५ व्यवहारसुत्र गाथा ११ ६निशीथसुत्र गाथा ११
 व्यवहारसुत्र गाथा १३

बुहा

भुषण जीन सासन तणा पदवीधर गुण खान
 स्थम कथा जीन धर्मना सबअनेपरमतनाजाण ॥ १ ॥

सारण वादण चोयणा प्रतीचोयण करे तेद
सघ चलावे आणमे ते सुरी गुण गेह ॥ २ ॥

हाल ४ धी देसीउपर परमाणे

आचार्य उपाध्यायजी-प्रवर्तक हो धरीर गणी आण
गणाय छेदक गण भरु सात पदवी हो कही रत्ननी खाण ॥ सु० १ ॥

सात रत्न चक्रवर्तना करे हो चतुरदीसी अंत
गुण गीम्बा पदनी घरा जेणे तार्या हो क्षीर अनत ॥ सु० ॥ २ ॥

जे पदगी नारक इती इमणाना मुणीये समाचार
गुण हीणा गॅचडया पडया हो ममत्व मझार ॥ सु० ॥ ३ ॥

स्वमतने जाणे नहीं केम होये हो परमतना जाण
जाणे थोडु ताणे घणु-ग्याली हो मांडी रोचताण ॥ सु० ॥ ४ ॥

भाष्य देरो व्यवहारनी विस्तारे हो सोलीने नेण (आंसु)
अगोतार्थने सेवता सोट आवसे हो वीरनावेण ॥ सु० ॥ ५ ॥

नहीं योग नहीं योग्यता बनी वेठा हो आचारज पाट
सुरि छरीस गुणे कया रक्षा कया रही हो गणी सपदा

आठ ॥ सु० ॥ ६ ॥

पाटीदार पटेलीया कोई हो ब्राह्मण माली जाट
अग हीना केह पात्ररा नहीं शोभे हो वीरने पाट ॥ सु० ॥ ७ ॥

उंचो घरे आचारने क्रीया हो घरे कष्ट ममान
आचारज थया अमरिया नहीं क्रीया हो नहीं रसोशन ॥ सु० ८ ॥

पोटी उपाधी धरावता रीताव हो राखे दो चार
कया कोरीकया धीवरी-(शीला) बनेडुवे हो जलमझारा ॥ सु० ९ ॥

परस्पर छापं छपारता स्वश्लाघा हो पर नादक तेह
 पैसा खरचे वाणीया दृष्टी रागी हो नहीं धर्म स्नेह ॥ सु० ॥ १० ॥
 निशीथ आचारग मएषा विना, अथवा हो भणीने जायभुल
 पदवी देवी कल्पे नहीं जुओ हो च्यवहारनु मूल ॥ सु० ११ ॥
 हाथी तणा मोजो लेह हो खर उपर मूल
 पदवी देवे अयोग्यने-नहीं जुमेहो जाती ने बुल ॥ सु० ॥ १२ ॥
 पदवी देवे अयोग्यने नहीं छोडावे हो सध
 दड तणा मागी होने जुवोहो वपवहारनो रग ॥ सु० ॥ १३ ॥
 पोताना शिष्यमाने नहीं सु करसे हो सासननोकाम
 आचार्य घर घर तणा रघो हो निक्षेपो नाम ॥ सु० ॥ १४ ॥
 ज्ञान योग उपखानना नामलेई हो मेल्ल करे पाप
 लामो लामो करताकरे-मजकलदार हो चेठा जपे जाप ॥ सु० १५ ॥
 मर्या पछी पुस्तक नीकले चेलाहो वेंहचीने खाय (लेने)
 नहीं तो रात्रे वाणीया अथवा कोरटमा जाप ॥ सु० ॥ १६ ॥
 चरण स्थपाने तेहना-मूर्ति हो घरे मदीर बीच (वचमां)
 छरीयो चितरावे बहु मूली-स्वश्लाघा हो करे ने नीचा ॥ सु० १७ ॥
 तप सयम आतम घेले केई कीषा हो जेणे जैन अनेक
 तेहनी खाने रोटीयो. लडावे हो मांहो मांही एरु ॥ सु० ॥ १८ ॥
 अमीमानी झगडा करे सु आशा हो नवाकरे जैन
 मम लजीया कक्षा नाथ जी जुओहो आगमनावेण ॥ सु० ॥ १९ ॥
 उत्तमजो उचा छोडे, नीचाने हो लेने आपणीपास
 कइयीदवाई गुण करे सासनप्रेमी हो करे अग्जी खासा ॥ सु० २० ॥

लज्जा रासो पदवी तणी मांन वृत्ती हो आपममाप्रेम-
 मामननी सेवा करो पापो हो जलदी सीर जेम ॥ सु० २१॥

ढाल ४ भी नो तान्पर्य.

ज्यांसुधी आचार्यना गुणेनी योग्यता न होय त्यांसुधी आचार्य
 पदवी नेत्र आपवी अने लेग यालाने पण पुरो विचार कररो
 अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपवी तथा लेंवी
 अनेसधने शातमार्गप्रवर्ताववो.

गणी ऋषीकार पाने १५-१६ क्रिम सुत्रोक्त आधार से नाम
 १ नीशीच सुत्र गाथा २ २ स्थानायंग सुत्र गाथा ११
 ३ व्यरहारसुत्र गाथा ११

दोहा- गुण गीरवा गणी करे गच्छ तणा सुभ काम
 लीनागपोर्वा दीसे नहीं पन्यासीना नाम ॥ १ ॥
 के थाय सवेगी नामना नहीं सवेगनो रग
 पदवी तणा भगडा करे लई लई ग्रदस्थी सग ॥२॥

ढाल ५ भी देमी आगल परमाणे

समिती गुप्ति जाणे नहीं सायद्य निरयद्य हो नहीं होवे हो मान
 दोष जाणे नहीं आहारना नहीं हो भाषानु ज्ञान ॥सु०॥१॥
 इष्ट पुष्ट साधु वन्या माल लाई हो बनीया मस्तान
 जुठा योग बहन करे कलीयुगी हो माडयु तोफान ॥ सु०॥२॥
 नव तत्व नहीं आपडे नहीं हो दम वैकालीक ज्ञान
 योग बहे भगवती तणा भरतमाहेहो मचीउँ अज्ञान ॥सु०॥३॥

परस्पर छापा छपानता स्वश्लाघा हो पर नोंदक तेह
 पैसा सरचे वाणीया दृष्टी रागी हो नहीं धर्म स्नेह ॥ सु० ॥ १० ॥
 निशीथ आचारग भएया त्रिना, अथवा हो भणीने जायमुल
 पदवी देवी कल्पे नहीं जुओ हो व्यचहारनु मूल ॥ सु० ११ ॥
 हाथी तणा घोत्रो रेह-हो पर उपर मूल
 पदवी देवे अयोग्यने-नहीं जुमेहो जाती ने कुल ॥ सु० ॥ १२ ॥
 पदवी देवे अयोग्यने नहीं छोटावे हो सध
 दंड तणा मागी होये जुमोहो व्यनहारनो रग ॥ सु० ॥ १३ ॥
 पोताना शिष्यमाने नहीं सु करसे हो सासननोकाम
 आचार्य घर घर तणा रघो हो निक्षेपो नाम ॥ सु० ॥ १४ ॥
 ज्ञान योग उपचानना नामलेई हो भेल्ल करे पाप
 लावो लावो करताकरे मजकलदार हो बेठा जपे जाप ॥ सु० १५ ॥
 मर्या पद्यी पुस्तक नीकले-चेलाहो वैदचीने राय (लेने)
 नहीं तो रावे वाणीया अथवा कोरटवा जाय ॥ सु० ॥ १६ ॥
 चरण स्थपाने तेहना-मुर्ति हो घरे मदीर बीच (वचन)
 छरीयो चितरावे बहु मूली-स्वश्लाघा हो करे ने नीचा ॥ सु० १७ ॥
 तप सयम आतम चले केई फीषा हो जेणे जैन अनेक
 तेहनी खावे रोटीयो, लडावे हो माहो माही एरु ॥ सु० ॥ १८ ॥
 अमीमानी झगडा करे सु आशा हो नवाकरे जैन
 मम लजीया कक्षा नाथ जी जुओहो आगमनावेण ॥ सु० ॥ १९ ॥
 उच्चमजो उचा छोडे, नीचाने हो लेने आपणीपास
 कडपीदवाई गुण करे साधनप्रेमी हो करे अरजी रासा ॥ सु० २० ॥

लज्जा रातो पदवी तपी मान पृनी हो आपमप्रिय-
सासननी सेवा करी-पापो हो जलदी सीर जेव ॥ सु० २१ ॥

ढाल ४ थी नो सन्धय.

ज्यामुषी आषार्यना गुणनी योग्यता न होय त्यामुषी आषार्य
पदवी नेत्र आपसी अने लेग चलाने पण पुरो विचार करी
अगर पदवीने योग्यता होय तो पदवी आपसी तथा लेवी
अनेसपने शांतमार्गप्रवर्तव्यो

गणी अर्धाकार पाने १५-१६ रिम सुप्रोके आषार से नाम
१ नीशीय सुत्र गाथा २ २ स्थानापग सुत्र गाथा ११

३ व्यवहारसुत्र गाथा ११

दोहा- गुण गांधा गणी करे मच्छ तथा गुम काप
धीनागमोर्षा दीसे नहीं पन्यामोना नाम ॥ १ ॥
के पाप संवेगी नापना-नहीं सवेगनो रग
पदवी तथा भगवटा करे नई लई ग्रहणी संग ॥२॥

ढाल ५ थी दसी आगल परमाणे

प्रमिती गुण्यि जाणे नहीं नावय निरग्र्य हो नहीं होवे हो मान
दोष जाणे नहीं आदारना नहीं हो भाषानु ज्ञान ॥ सु० ॥ १ ॥
इष्ट पुष्ट साधु बन्धा माल राई हो बनीया मदान
चुटा योग वदन करे कर्मीयुगी हो माड्यु लोकान ॥ सु० ॥ २ ॥
नर वरु नहीं आरडे नहीं हो दग वैकालीक ज्ञान
योग बडे भगवती चला भरतमहिदो मचीडे अज्ञान ॥ सु० ॥ ३ ॥

सुत्र क्रमसर वाचना उन्क्रम हो कद्यो दड निशीथ
 पाप उदय पन्यासनु तोडी हो बीन सामनरीत ॥सु०४॥
 दाडा बाभ्या पन्यासजी बीजा हो नहीं करावे जोग
 मायाजाल वेठामाडीने सासने हो लगाव्योरोम ॥सु०५॥
 आगम वांचता उंची घरी पामत्था हो क्रीया दीर्घी स्थाप
 पुस्तक धर्या भडारमा कोण वाचेहो पन्यासनो वाप ॥ सु०६॥
 मेद करे गच्छ माहे ने सघ माहे हो करे खंचाताण
 दूकान जमावे आपनी पदवी पाम्या हो नहीं पाम्या ज्ञान ॥सु०७॥
 पुण्योदय साधु थया-आघाकर्मी हो खाई करे पुन्यनास
 पाप पुरा उदय आरीया माधु होये हो पठी पन्यास ॥ सु० ८॥
 सु लखु हो मारा साहीवा-देखा देखी हो लागे चेपी रोम
 एक बीजाथी आगल पडे नहीं देखे हो योगा योग ॥सु०९॥
 अंदरनु रहस्य हने सुणो-थई पन्यास हो माडे उपधान
 माल पाणी नाशुमले महिला मली हो करे सन्मान ॥सु० १०॥
 ठाणापग ठाणे आठमें सुनहो व्यवहारने खोल
 कहेता तो गुणगणीतणा केम चालेहो, जेपोलम पोल॥सु० ११॥
 जो सघ जो नीर्णय नहीं करे-थासे हो श्री वीरना चोर
 मारी फर्ज मे बजावीछे-जुठो हो मत करजो सोर ॥ सु० १२ ॥
 ढालधनो तात्पर्य जेधी रीते आचार्य पदवी लेछे तेवीज रीतेगणी

समजवा

योगबहन अरीकार-पाना १६-१८ क्रिष सुत्रोंके आधार से नाम.
 १ सुयगढोग सुत्र गा० १ २ महानिशीथ सुत्र गाया १

- | | |
|--------------------------|----------------------------|
| १ अग जुलीया सुत्र गाथा १ | ४ उत्तराष्यपन सुत्र गा. १ |
| ५ मगवती सुत्र गाथा २ | ६ पन्नवणा सुत्र गाथा ३ |
| ७ नदी सुत्र गाथा ३ | ८ व्यवहार सुत्र गाथा ६ |
| ९ मगवती सुत्र गा० १० | १० अणुनरोवाईसुत्र गा १० |
| ११ व्यवहार सुत्र गा ११ | १२ मगवती सुत्र गाथा १२ |
| १३ समवायांग सुत्र गा १९ | १४ अठगड दमांग गा. २० |
| १५ बृहतकल्पसुत्र गाथा २३ | १६ व्यवहारसुत्र गाथा २५-२७ |

दोहा- सुत्र वाचे तप करे योग वहन तस नाम

आगम माहे देखीलो माखे श्री मुगस्याम (जीनेश्वरदेव) १

कल्पित विधी योगनी भोलापट्टीपात्रम

धर्म आज्ञा वीतगगनी आज्ञा बहार अधर्म २

हाल ६ देसी आगलपरमाणे

महानिशीय अग जुलीया उत्तराष्यपने हो दीसे योगनानाम

सत्यपार्ग गोपीकरी चैत्य वासीए हो कर्पु दामनु काम ॥ सु० १ ॥

मगवतीनी वाचना सडसठ (६७) दीन हो मूल पाठ साजोय
हमणां योग छपामना आगम आणाहो विराधरु होय ॥ सु० २ ॥

पन्नवणा पाछल वनी पहेला हो नहीं होवे योग

देवदीगर्णा नदीरची-त्या सुधी हो आ नहीं हतो आ रोगा ॥ सु० ३ ॥

आगम अते एम कष्टु अटलादीन होउ देमन काल

नेविधी उचीपरी पासत्या हो माढी मननीजाल ॥ सु० ४ ॥

गणघर सुचित विधी एक हो जेमाहे ही, कीण आपेसक

गच्छगच्छना जुदी जुदी कल्पीत हो नविहीवे निश्चक ॥ सु० ५ ॥

सुत्र क्रमपर वाचना उन्क्रम हो कयो दह निशीथ
 पाप उदय पन्यामनु तोडी हो बीन सासनरीत ॥सु०४॥
 दाडा बाभ्या पन्यासजी बीजा हो नहीं करावे जोग
 मायाजाल वेठामाडीने सासने हो लगाव्योरोग ॥सु०५॥
 आगम वांचता उंची घरी पामत्था हो क्रीया दीधी स्थाप
 पुस्तक घर्षा भडारमा कोण वाचेहो पन्यामनो चाप ॥ सु०६॥
 भेद करे गच्छ माहे ने सघ माहे हो करे खेंचाताण
 दुकान जमाये आपनी पदवी पाम्या हो नहीं पाम्या ज्ञान ॥सु०७॥
 पुण्योदय साधु थया-आघाकर्मा हो खाई करे पुन्यनास
 पाप पुरा उदय आगीया साधु होवे हो पठी पन्यास ॥ सु० ८॥
 सु लसु हो मारा साहीवा-देखा दखी हो लागे चेपी रोग
 एक बीजाधी आगल पडे-नहीं देखे हो योगा योग ॥सु०९॥
 अंदरनु रहस्य हवे सुणो-थई पन्यास हो माडे उपधान
 माल पाणी नाणुमले महिला मली हो करे सन्मान ॥सु० १०॥
 ठाणायग ठाणे आठमं सुनहो व्यवहारने खोल
 कहेता तो गुणगणीतणा केम चालेहो, जेपोलम पोला॥सु० ११॥
 जो सघ जो नीर्णय नहीं करे-थासे हो श्री वीरना चोर
 मारी फर्ज मे बजाबीछे-जुठो हो मत करजो सोर ॥ सु० १२ ॥
 ढालूनो तात्पर्य जेधी रीते आचार्य पदवी लेछे तेरीज रीतेगणी

समजवा

योगबहिन अर्धाकार-पाना १६-१८ क्रिष सुत्रोंके आधार से नाप-
 १ सुपगडांग सुत्र गा० १ २ महानिशीथ सुत्र गाथा १

३ अग चुलीया सुत्र गाथा १

५ भगवती सुत्र गाथा २

७ नदी सुत्र गाथा ३

९ भगवती सुत्र गा० १०

११ व्यवहार सुत्र गा ११

१३ सपत्न्याग सुत्र गा १९

१५ वृहत्कल्पसुत्र गाथा २३

४ उत्तराध्ययन सुत्र गा. १

६ पन्नवणा सुत्र गाथा ३

८ व्यवहार सुत्र गाथा ६

१० अणुतरोवाईसुत्र गा. १०

१२ भगवती सुत्र गाथा १२

१४ अतगड दसांग गा. २०

१६ व्यवहारसुत्र गाथा २५-२७

दोहा- सुत्र वाचे तप करे-योग बहन तस नाम

आगम माहे देखीलो मात्ते श्री मूलस्याम (जीनेश्वरदेव) १

कल्पित विधी योगनी भोलापडीयाभ्रम

धर्म भाज्ञा वीतगगनी आज्ञा पहार अधर्म २

ढाल ६ देसी आगलपरमाणे

महानिशीय अग चुलीया उत्तराध्ययने हो दीसे योगनानाम

सत्यमार्ग गोपीकरी चैत्य वासीए हो कर्युं दामनु काम ॥ सु० १ ॥

भगवतीनी वाचना सडमठ (६७) दीन हो मूल पाठ सांजोय

इपणा योग छमासना आगम आणाहो विराधक होय ॥ सु० २ ॥

पन्नवणा पाछल बनी पहेला हो नहीं होवे योग

देवदीगणी नदीरची-त्या सुधी हो आ नहीं हतो आ रोग ॥ सु० ३ ॥

आगम अते एम कष्टु अटलादीन होउ देसन काल

नेविधी उचीपरी पासत्या हो मांडी मननीजाल ॥ सु० ४ ॥

गणधर सुचित विधी एक हो जेपहे हो, कोण आणेसक

गच्छगच्चना जुदी जुदी कल्पित हो नविहीवे निशक ॥ सु० ५ ॥

भगवती योग कर्मा विना नहीं देवे हों गणी पद आज
 आगम विरुद्ध प्ररुपणा आधार्कर्मो हो खावे पदवी काज ॥ सु० ६ ॥
 नीशीथ आचारम जाण्या होये सुत्र हो व्यग्रहार्नीय तं
 जाती कुलने योगता देवी बल्पे हो जैन पदवी सात ॥ सु० ७ ॥
 बहल मुनी नीसरु मुनी छमासे हो भंगीया अंग अग्यार
 पांचमा नरमा जगमा नरमासे हो धन्नो अणुगार ॥ सु० ८ ॥
 जुठा योग बहन करे-आधार्कर्मो हो खावे पदवी काज
 अगिनार्थ अभिमानीया पदवी लेता हो आये नरीलाज ॥ सु० ९ ॥
 भगवती पहिले सतकमें आधार्कर्मो हो साधु ग्यानेजाण
 रुले अनत समारमा-केम काढे हो नीजाने ताण ॥ सु० १० ॥
 जोग तणा आहारनी लखता चाले नहीं हाथ
 हा हा भरतमा सु थयु मलीयो हो स्वारथीयो साथ ॥ सु० ११ ॥
 रामनेही साधुना-भोजन वने हो घरमातम
 कर्मती नहीं योग बहनमा वनडो (वर) वेठोहो उदोलेजेमा ॥ सु० १२ ॥
 बारा बांधी आवेठो श्राविका काले सु आरसे तप
 पाप उदप पन्यासना-अमुरु साधुने अमुरु थासेखप ॥ सु० १३ ॥
 तैयारी करी आये तेडवा लाभ दओ हो मारा स्वामीनाथ
 आधार्कर्मार्थी शरु नहीं देवे लेये हो डवे वने साथ ॥ सु० १४ ॥
 पचसाण करे आत्रिल तणा. दही त्या कंडो हो खाई जाय
 मीठु परचुं हींगने जीरु. दमनीस हो भोजन वनवाय ॥ सु० १५ ॥
 नीशीतो वाजे नामन. कलाकंद हो खीरने दुधपाक
 तन्यु गन्युखपेधणु वदाप मिरजी हो मेवाने दाख ॥ सु० १६ ॥

पचासाण करे विगय तणा-विगय खावे हो लागे मोडु पाप
 महामोहनीयकर्म बाधतो ममगायगे हो मांरुयो श्रीआप॥सु०॥१७
 काली श्रादी हो दस राखीयो जवगडमा हो घानील अधीकार
 लेपादि विगय वरजीया-केवल पानीहो गई सुद्धि पभार ॥सु० १८
 छठ तप आगील पारणे नवमे अगे हो घन्नो अणगार
 लुगो आहार वे द्रव्यनो समाचारीया चान्यो अधिकार ॥सु० १९
 साधवीओ आर एकली लेने हो योग वहन नाम
 काल विकाल गणे नहीं, कोण जाणे हो पन्पासोना काप ॥सु० २०
 साधुना स्थानमा साधवी, वरजी हो वृद्ध वल्प मोभार
 आलाप सलाप करवो नहीं-नागण परे चतावी हो नारा॥सु० २१
 सव चतुर्विध माहने सुखा आवेहो व्याख्यान,
 प्रविविनी पासे रहे लेवे देवे हो आपसमा द्धान ॥ सु० २२ ॥
 नानी दीक्षा दीन सातनी मध्यम हो, राखे भासचार
 उत्कृष्टो ह्यपासनी जुओहो सुत्र व्यवहार ॥सु० २३॥
 विडम्बणा अभ्ययन भण्णावता हमणा हो चजीवणीयां सार
 तेषण लुप्त करवामणी ज्ञान-हीना हो, केवल क्रीया-चार॥सु० २४
 नानी दिव्यामा साधु-रहे वर्ष वे वर्ष हो, वर्ष चार
 आत्रा नहीं वीतरागनी-पुन्य नास हो होवे आज्ञाचहारा॥सु० २५
 योग करारे नहीं अन्त्यने करावता हो पहैला करे, कोल (सरत)-
 एटला पुस्तक आदितणा-रखावेहो पहैली रोऊडमोल(धुल)सु० २६
 केटली लखु पारा चापजी-लीलाहो जेहनी अपरपार
 बुद्धि सुधारो नाथजी मारी, अरजी हो चारवार ॥ सु० २७ ॥

ढाल ६ तात्पर्य के जीनागमोनी वाचना आपनी सिद्धा-
तोनी रहस्य शिष्य मडल ने समजावधु परतु जे योगने वहाने
लोभादीवृती तथा आघाकर्पादि आहार जे अहीत कारक छोटी
प्रवृतीयोछे तेन तिलांजली आपवी । उपधान अर्धीकार पानाँ
११-२० लेख किस सुत्रोके आधार से:-

- | | |
|-------------------|------------|
| १ महानिशीथ गाथा ८ | २ सुपगडाग |
| ३ दस वैकालीक | ४ महानिशीथ |

दोहरा- गुरु गीतार्थ पासे करे, उपधान तपसार ।
जैन विधी अनुमारथी. ते पामे भवपार ॥१॥
धर्म अमुन्य जीनेद्रनो वैचाय दुकाने मोल(मुन्य)
धर्म नाम घाडांसुले पन्यासोनी पोल ॥ २ ॥

ढाल ७मी देसी पुर्वनी.

आबिल प्रमुख तप करे श्रावक हो भरो गुरुनी पास
श्राविका गुरुणीकने. हमणा हो जोवो पन्यास ॥सु० १॥
उपधान करावता पहेला पैसा लेवे हो ज्ञानने नामे ।
पेढी जमावी ब्राह्मण परे कोई फाटी हो पेदास नो कामा॥सु० २॥
सधवा विधवा मले घणी भाग्येज भाई मले दस बार
क्रीया करावे पन्यासजी महिला साथे हो मडि प्रचार ॥सु० ३॥
नारीना परिचयकी- यति क्रिधो हो घरवास
प्रत्यक्ष देखी केम करे त्यागी हो महिला सहवास ॥सु० ४॥
आरम करावे नवनवा भोजन कागण हो देवे आदेश
माल उढावी करे भोजने गाडो मल्यो हो गुर्जरनो देसा॥सु० ५॥

मोचन जमे बाणीया-ओघो लेइ जाये हो पन्याम
अमुक सामन रूप कर्युं-(त्यारे बोले) सु सुपे हो बने थादरना
दाम ॥सु० ६॥

नाम लेवे निवित्तपो आहार तर्णु हो, जाणो जम माण
बदाम तणो हलरो बने जलेयी हो कडाकद पीछाण ॥ सु०७ ॥

लाडू पेडा बरफी बने. दूषपाक हो नहीं रहे दुर
देयरा ने पुडला बने-जुदा जुदा शाक हो हाडा मरपुगा॥सु०८॥

वृषणी मरे मरे पाठरा-माधुजी हो टठावे माल
धर्म नामे घुर्थ जागीया पन्यासे हो पीछावी जाल ॥सु०९॥

फेई ग्रहस्थी जैनना-नहीं मले हो खावाने घान्य
वपधान नामे मुनीराजजी माल उठावे हो पली मस्ताना॥सु०१०॥

अमुक बाइये दस दीया तुतो हो मोटा घरनी बेन
मोके बमो थापमो धीरे धीरे हो बोले मधुरा वेण ॥सु०११॥

राही राहो ठगरा मणी-मला जाग्या हो बोले दीने चोर
शान नामे मेनु करे-वापोदप हो पडे चोगोर्मा घोर ॥ सु०१२॥

वृष्णा अवर (भ्रकाश) जेबडी कगवे हो माला लीलाम
शदे बधारे बाणीया मेला करेहो लोमीडा दाम ॥सु० ३॥

सिद्ध साधक रहे बाणीया धर्मा दीया हो मळे दलाल
कलीपुगीया मेला धया केम रहे हो साहुनो माल ॥सु०१४॥

ओछा जीरीक कारणे सयम खोले हो अहानी माल
जरातो दरो परमनधकी माधा उपर भपेछे फाली॥सु०१५॥ ५

ढाल ६ तात्पर्य के जीनागमोनी वाचना आपनी सिद्धां
 लोनो रहस्य शिष्य मडल ने समजाववु परतु जे योगने पहाने
 लोमादीवृती त्या आघाकर्मादि आहार जे अहीत कारक खोटी
 प्रवृत्तियोछे तेन तिलांजली आपवी । उपधान अधीकार पाना
 १६-२० लेख किस सुत्रोके आधार से:-

- | | |
|-------------------|------------|
| १ महानिशीथ गाथा ८ | २ सुयगडांग |
| ३ दम वैकालीक | ४ महानिशीथ |

दोहरा- गुरु गीतार्थ पासे करे, उपधान तपसार ।
 जैन विधी अनुमार्थी. ते पामे भवपार ॥१॥
 धर्म अमृन्व्य जीनेंद्रनो वेंचाय दुकाने मोल(मुन्व्य)
 धर्म नाम घाडांगुले पन्यामोनी पोल ॥ २ ॥

ढाल ७मी देसी पुर्वनी.

आत्रिल प्रमुख तप करे श्रावक हो भणे गुरुनी पास
 श्राविका गुरुणीकने. हषणां हो जोमो पन्यास ॥सु० १॥
 उपधान करावतां पहेला पैसा लेवे हो ज्ञानने नामे
 पेढी जमावी ब्राह्मण परे कोई फाटी हो पेदास नो कामा ॥सु० २॥
 सधवा विधवा मने घणी माग्येज भाई मले दस चार
 क्रीया छरावे पन्यामजी महिला साघे हो मण्डे प्रचार ॥सु० ३॥
 नारीना परिचयथकी- यति किधो हो घरवास
 प्रत्यक्ष देखी केष करे त्यागी हो महिला सहवास ॥सु० ४॥
 आरम करावे नवनवा भोजन कागण हो देवे आदेश
 माल उढावी करे भोजने गाडो मन्व्यो हो गुर्जरनो देसा ॥सु० ५॥

मोहन जमे बाणीया ओषो लेट जावे हो पन्यास
अबुह सामन केम क्युं (त्यारे बोले) मुं तपे हो बने यावना
दास ॥ सु० ६ ॥

नाम लेवे निवितणो आहार तणु हो; जाणो जग भाण
बदाम तणो हलबो बने जलेयी हो कटाकद पीछाण ॥ सु० ७ ॥

लाडु पेडा बरफी बने. दुधपाक हो नहीं रहे दुर
देयरां ने पुडला बने जुदा जुदां शाक हो हाडा भरपुगा ॥ सु० ८ ॥

वृषणी भरे भरे पातरा-माधुजी हो उठावे माल
धर्म नामे पुर्त जागीया पन्यासे हो पीछावी जाल ॥ सु० ९ ॥

फेई श्रद्धेयी जेनना नहीं मले हो यावाने धान्य
उपधान नामे मुनीराजजी माल उठावे हो मली मस्तान ॥ सु० १० ॥

अमुक पाइये दम दीया तुतो हो मोटा घरनी बेन
मोकें पमो आपमो धीरे धीर हो बोले मधुरा बेण ॥ सु० ११ ॥

राही राडो ठपरा मणी मला जाग्या हो घोले दीने खोर
शान नामे मेडु करे-यापोदय हो पडे चोगीमा मौर ॥ सु० १२ ॥

वृष्णा अरर (आकाश) जेवडी रुगने हो माला लीलाम
बादे बधारे बाणीया मेल करे हो लोमीडा दाप ॥ सु० १३ ॥

सिद्ध साधक रहे बाणीया घमा दीया हो मळे दलाल
कलीपुगीया मेल्ल घया केम रहे हो साहुनो माल ॥ सु० १४ ॥

ओछा जीवीक कारणे सवम खोले हो अज्ञानी माल
जरातो डरो परभवधकी माथा ठपर मनेछे फाली ॥ सु० १५ ॥

वणीक भडकमे वाचीने पन्याम हो केई क्रोध
 मूलमण् करु तेहने पद छोडी हो करो सोची मोघ ॥सु० १६॥
 साञ्जामा समकीत नसे मायाभा हो आवे मिथ्यात्व
 केवा चीत्रहु चीतरु, तु जाणे हो मारा त्रीभुवन नाथ ॥सु० १७॥

ढाल ७ मी तात्पर्य-गीतार्थाचार्य मुनी महागज श्रावक
 वर्ग ने योगता पुरक जैन धर्मना राम तत्र ज्ञान नित्य धर्म
 क्रीयानु ज्ञान आपनु अने मये तप करावयो किन्तु जे धाम
 धुम फोकट आडवरमा द्रव्य एरचाववा के खावा पीवा ल्या
 पैसाना लोभे के स्त्रीयो साथे जे प्रचारनी प्रवृत्तीछे तेने दुर करवी
 तीर्थ यात्रा अधीकार पाना ५४ से ५७ कीस सुत्रोंके आधारसे
 १ आचारग गा० २ २ भगवती गा० १ ३ आचारग गा. १२
 ४ उत्तराध्ययन गा. १२ ५ अनुयोग द्वार गा १७
 ६ महानीसीथ गा. २० ७ उत्तराध्ययन गा २१ ८ ज्ञाता गा २२
 ९ भगवती गा २२ १० अतमड दशाग गा २२
 ११ स्थानायग गा २७

दोहरा-तीर्थ तीर्थवतिनणु तीर्थ उत्तारे पार
 तीर्थ सेमाजे करे घन्य तेनो अपतार
 तीर्थ यात्रा करवी कही-आचारगनो लेख
 सम्यकत्व निर्मल रहे-बहुला आगम, पेख.

ढाल २३ देसी पुर्वनी

आगम जल, निधी भयो मुनी हमाहो नित्य करे कलोल
 तप, सपमनी, जात्रा जुओहो भगवती खोल ॥सु० ११॥

गाम गाम जई विचरे काइ करे हो स्वपरनो उद्धार
 विहार ऊरठां तिर्योनमे करे होते मनो पार ॥मु० २॥
 न्याय उपार्जित द्रव्ययी पोते हो सुभ गगरे भाव-
 पुदगलनी इच्छा नहीं भागक हो जाणे चोक्रनो दायाः ॥मु० ३॥
 छरी पाली करे पाठरा देवे हो पीजाने महान
 चेत्य उद्धार कसपठां सार्पा हो केई आतप कात्र ॥मु० ४॥
 जीवतशी जतना करे-नहीं पोले हो मृपावाद
 परधन ने बाँधि नहीं नहीं सेने हो विषय आलाड ॥मु० ५॥
 रात्री प्रयाण करे नहीं, नही जाये हो चोमासे बहार
 स्वाम रत्ननी सघ होवे, हालना हो सुणीये समाचार ॥मु० ६॥
 मुन उठावे दुडीया पामत्था करे अधीकृ थाप
 ओट्टु अधीकृ घोसतां लागे हो मिथ्यात्वनु पाप ॥मु० ७॥
 नहीं करता गुरु कष्टु भविषी हो लघु प्रायश्चित जाण
 विधी करतां भव जल तरे एवी हो श्री क्षीनवर आण ॥मु० ८॥
 मर्यादा मुनीवर तजी सघ तणी हो करे कोशीस
 उचो धर्मो आचार ने सु लखु हो जाणो जगदीश ॥मु० ९॥
 नाप लेवे यात्रा तणो माये राये हो गाडी ने माल
 दाल बाटी ने चुरमां अहींथी लाग्यो हो मझानो ताल ॥मु० १०॥
 साधत्रीओ साथे रहे-विधवा हो रहे दस धीव
 माये भाई मले कोइ सु लखु हो जाणे जगदीस ॥मु० ११॥
 स्त्रीयो साथे साधु ने वरजे हो आचारगे प्म
 उतराप्यपने सोलमं-वाड भागे हो सियलनी सेवा ॥मु० १२॥

साधु कारण तबु रहे तबु कारण हो गाडीने उट
बीव हणाय छ कायना पुछेथी हो बली बोले जुठ ॥सु०१३॥
आज्ञा चोरी वीतरागनी महिला साथे हो भागे सियलनी वाड
ममता खुली दीसे पाचमुं व्रत हो एम दीधु ताड(नाम)॥सु०१४
उठे पाछली रातना सघ चाले हो फरे गामो गाम
साधु साध्वी राते चालना निदाये हो घणा ठाम ठामा॥सु०१५॥
उनो पाणी फरे रातना घडा भरी हो वाइओ रहे (माघ) लार
तेहज पाणी वापरे यात्रा नामे हो जाये समय हार ॥सु०१६॥
नीलण फुलण कोण गणे-कोण करे जीवोनी सार
निरतु कपा अनुयोगमा-भक्ती नामे हो करे अत्याचारा॥सु०१७
सो जणा सघमां होवे उनो पाणी पीये हो दस वीम
आधारुर्मा आरोगता साधु साध्वी हो मेगा पचवीम ॥सु०१८
सो पचास के बसो रहे-माल मले हो सुणो तीर्थ नाथ
मार्गमां मुक्ती नहीं हाथ पकडी हो लै आये साथ ॥सु०१९॥
देव सुरीजी ने तेडीया कुमार पाळे हो कटाव्यो सघ
स्त्रीयो साथे कल्पे नहीं उतर दीधो हो आगमनो रग ॥सु०२०॥
गुरु गौतम करी जातस अष्टापद हो एकला आप
ने बखते हो सघ नहीं कछो पासन्थाए पाछल दीधु स्थाप ॥सु०२१
यात्रा कीधो पाडये जाली आदी हो घणा मुनीराज
पाचमा अठमां अगमां मुक्ति गयाहो माधी आतम काज ॥सु०२२
चोमासे गामातरे थावक हो जाये नहीं बीजे गाम
सघ कटावे जाये वदाना. करे हो पोतानु काम ॥सु०२३॥

कइतो बनना लोमीया केइ हो जुरो पुन ने काज
 कई रोगादिक काठया यात्रा करवा हो मने समाज ॥सु०२४॥
 बणीक ठगे बधा जगत ने नहीं मुके हो बीतराम देव
 ने ने पग ठगवा भणी नहीं छोडे हो अनादिनी टेवा ॥सु०२५॥
 माग घाले दुकानपा मिलोपा कोई गये माग
 माग राखी सट्टा करे उज्जल ने हो लगावे दाघ ॥सु०२६॥
 लोकोत्तर पद क्रीया करे-बाधे हो लोकिकना सुग
 विश्रयीया विध्यास्वनी एम माव्यो हो आपे थीमुख ॥सु०२७॥
 धर्म शालामां उचरे-पते घोषट हो रमे कहेवा सघ
 राजा राणीने मारता- जुओ हो जातरानो रग ॥सु०२८॥
 अनार्य भाषा बोलता गाली गुप्ता हो करे कच्छेश
 कई धर्मादृ चोरता गीदड हो पहेरे बाघनो वेप ॥सु०२९॥
 कई तीर्थ पण एबाघयां माची वेठा हो दुम्नानोना फाम
 मुनीम रोकडीया मलया भेला करे हो फरीने दाम ॥सु०३०॥
 पट्टी नाणु एकट्ट थना सेर जेवे हो नीळोनु पाप
 के जमां मने बेंरुपा बणीक लीलानु हो केव थाये मापा ॥सु०३१॥
 जीर्णोद्धार करावे नहीं नही देवे हो रीजे तीर्थ दाम
 टस्टी जाखे मारा बापनु पोटा मलया हो थोडु करे फामा ॥सु०३२॥
 बैन पघ कटायता. दुढक हो जावे वदन फाज
 (तेरा) पंथी जावे पुजकने आडम्बरची हो एम बगडी
 समाज ॥ सु० ३३ ॥

घमावमीमा धर्म नहीं धर्म रह्यो नीज आतममाह
नेतो वीरला ओळसे. देरा देखी हो ववे वाजा वजाय ॥सु० ३४
यात्रा कारण जन मले, नहीं हो जैनधरमनो रग
जो यात्रा तारक कही दुरे मुकयो हो सवेग नो रग ॥सु० ३५॥
रामायण तो छे घणी लीलाहो जेनी अपरपार
मेशर नामो वाचीने भगतनो हो जलदी उधार ॥ सु० ३६ ॥

ढाल २३ नो सार-तीर्थ यात्रा मोक्षनो कारण छे परतु
घमा घम मोक्षनो कारण नवी-मारे पौदगलीक इच्छा छोडी
यत्न पुर्वक जिनाज्ञा सहित यात्रा करवी जोइये

मदीर उपाश्रय अधीकार पाना ५६ धी. ६०

कोन कोन से सुत्रों के आधार से १ जीवामीगम गा २

२ जडुद्वीप पन्नती. गा २

दोहरा

मंदीर वीतरागना करे जो तेहनी सार
जीर्णोद्वार करावता पामे भवनो पार ॥१॥

कली कालपा मोटफो भवीजनने आधार
जीन प्रतीमा जीन सारखी कहीते सुत्रमंझार ॥२॥

थावक मली पोसह करे पौषघ झाला नाम
चाहे कही उपासरो उपासकनो ठाम ॥३॥

ढाल २४ देशी पुर्वनी

अष्टापदवी उपरे आदिशर हो पहोंच्या निर्वाण
चैत्य बनाव्या तेहना शक्रेद्र हो रत्नोना जाण ॥सु० १॥

अर्धीकार आंगम तणो जंनु द्वीप हो पन्नती जाण
 परंपरा आपद्रे सुद्ध श्रद्धा हो राखे चतुर सुजाण ॥सु०२॥
 राजा राणी सेठीया-भक्ती भावे हो घणो धर्मनो राग
 कस्य बनावे नव नया-त्रिव थाप्या हो लीघो स्वर्गनो मार्ग ॥सु०३॥
 देरानो खर्चो नहीं पोते हो करता जीर्णोद्धार
 आला कुची रहता नहीं-नहीं हो गोठी मजु प्रचार ॥सु०४॥
 गावक पोते पुत्रता करता हो ते सार संभाल
 डतो काल आरो पांचमो पडया हो केई काल दुकाल ॥सु०५॥
 कस्य पास साधुं कस्यो थावक हो छोटी सार संभाल
 मर पडी हो मोटा द्रव्यनी थावक मली हो एकठो माल ॥सु०६॥
 अनु नामज पाडीउ देव द्रव्य हो ग्रंथे कस्यो लेख
 अंदार बनाव्या जुं जुआ-करे हो एक बीजाने देख ॥सु०७॥
 जेम जेम द्रव्य बसतो गयो तेम तेम हो अर्धीक कलेम
 रेणा दागीना प्रभु ने कप्या कृप्या हो बाधे हमेश ॥सु०८॥
 डतो काल थाय चोरीयो-लडे झगडे हो माया मस्तान
 आला कुची बीतरागने-चलावी हो कस्यो दुकान ॥सु०९॥
 मदीर ने उपासरा मोघ वारण हो मर्षियो बीतराग
 कारण कस्यो अन्यथा-शासन ने लगाव्यो दाग ॥सु०१०॥
 एक मदीरनी आशातना-बीजे मदीर हो द्रव्य रहे अनेक
 एक बीजाने आपे नहीं कोई देवे हो उपर लेखावी लेखा ॥सु०११॥
 याज लेवे आकरु पाळा हो आप एटले काल
 द्रव्य उपर नहीं मले तेना हो प्रभु सुणो हें बाल ॥सु०१२॥

त्रस्टीयो कोरट चडे देव नामे हो माडे फर्याद
 दीगवर श्वेतायरा माहे माहे हो मुकी मर्याद ॥सु० १३॥
 झगडा तो घरना होवे नाखे हो मदीरमां आप
 देव द्रव्य ने वापरे-कोरटे चडेहो करे बहु पाप ॥सु० १४॥
 ममत्वना मदीर वन्या अपदीक हो कहे आगम आप
 अवदीकने घादता आज्ञा भागे हो लागे मोडु' पाप ॥सु० १५॥
 देव द्रव्यनी वारता सुणो हो प्रभु बणीकनां काम
 सेर लेवे मीलो तणा-व्याजे घरे हो वेंकोमा दाम ॥सु० १६॥
 मोटा आरभ मिलो तणा श्रावक ने हो कळो कर्मादान
 भाग घाले वीतरागनो पळे हो कलीयुगना एनाण ॥सु० १७॥
 दुकान मकान बघावीने माडे देवे हो करे वेपार
 सु भगवान भुरे मरे के पालनो तेने परिवार ॥सु० १८॥
 जीर्णोद्वारनी टीपणी-मडावे हो करे गामो गाम
 खरचे आवक केटली थई-हिसाब आवकहो लाखे आठमराम सु० १९
 टेकस पडे ग्रहस्थ उपरे धर्म छोडी हो अन्य धर्म जाय
 निर्धनता अज्ञानता विना रुचें हो धर्म पेढी आय ॥सु० २०॥
 पेढी चलावे देवनी व्याज वटेहो राह्या मुनीम
 केइ बेका केइ वाणीपा राई गया हो तेनी नहीं रही सीप ॥सु० २१
 जीर्णोद्वार करे नहीं-नवा मदीर हो करे पोताने नाम
 मोटा आरभ अन्यायनु नहीं खपे हो देव द्रव्यमा दाम ॥सु० २२
 ज्ञान द्रव्य वधारबा ज्ञानोपकरण स्वपरना सुणो स्वाम
 गुरु गौतमथी नहीं टले करी देवे हो बघानो लीलाम ॥सु० २३॥

माला पहरेावे पैसा लुटवा अधीक हो एक एकनुँ मान
 जीव बापडा सुँरुरे जेग गुरु हो तेवा जजमान ॥सु०२४॥
 पहेलां पर्य आराधना हमणा हो करे बेपार
 ते द्रव्यनु सु होवे सुणजो हो तेना समाचार ॥सु० २५॥
 झगडा तो भाखा वर्षना काटे हो पर्युषण काल
 पर्य व्याख्या कया रही माहो माहे हो आवे गालम गाला ॥सु० २६
 नाम कीर्ती अमीमानथी बोली बोले हो बीजा लेवे तोड
 बाजा बागे रणतुरा इजत राखे हो(नहीं)नहीं सके छोड ॥सु०२७
 ज्यार पैसा देवा पडे बाधा काटे हो बली अमुका एम
 कोरट चडे घरणा देवे फजेती हो बली करे तेम ॥सु०२८॥
 देव ज्ञान द्रव्य तणा पोतुं राखे हो केइ गृहस्थी पास
 पोते पैसा बापरे काय काचो हो होवे देव द्रव्य नास ॥सु०२९
 प्रवृती चैत्यवासी तणी सत्य विजये हो बधी दीधी छोड
 यतिये मली सरुकरी. हजी सुधी हो नहीं सके तोड ॥सु०३०
 निषेध नहीं विधी तणो अविधीये लागे मोडु पाप
 केटलुलसु मारा बापजी नही छानु हो बहु जाणो आपा ॥सु०३१
 टाल २४ का साराशु भगवानना देरासर खरेखर
 मोक्षना दातार छे अने तीर्थ के देरासरनोरखण करतु ते सान
 ना रक्षण करवा जेबुछे. कलीकालमा देरासरो कराववा
 अमर साचववा कल्पवृक्ष तुन्य इच्छीत फलने देवावाकाछे
 परतु जे मँदीरो ने नामे लडवु जगडवु कैपमत्व करसु.
 ए दुःख दाई धई पडेछे माटेनेने त्याग करवु

षामा मुझे चुके अगर दृष्टी दीपथी अगर कोई ना खोटा पत भेदथी गेर वाजवी लागे ते सर्वेविच्छामिबुकड दई समाल करुउउं वीशेष विगत फरी ए पत्तीना पुस्तक मां भावसे.

आपुस्तकोंमां अगाउथीमदददेवावाला दाता- रोना नाम

- १००) एकमो रुपया सेठ हरीदास सोभागचन्द चेरपल बाला हाळे मुकाम मुम्बई न० २ जुनी हनुमान गली-माधव जी द० मालो ३६
- १००) एकमो सेठ वाराचन्द दलीचन्द. लापोदवाले. दुकान मु पुना न० १६ राहमाहेब केदारी रोड.
- ५०) पचास रुपया साह अमरलाल जी मोदी. हु. सिरोही हेड मास्टर ठी मोदीयों का बास.
- ५६) छपन्न रुपया एक आना मु० गुढा बालोतरा में सेठ दलीचन्द सभनाजी ए परचुरण परचुरण टीप करने हु सादरी सेठआरु की पेढी में मनीयाडर भेजा
- २१) एकवीस रुपया मु. अगवरी वाळे सेठ हिम्मतमल जी वनाजीने अपने तरफ से मनीयाडर सादरी सेठ आरु को भेजा।

(गुरुम्यो नमः)

इस पुस्तक का सुद्धी पत्रक

पाने	पत्रकी	मसुद्ध	शुद्ध
१—	७—	छे कायना—	छ कायना
१—	११—	विरसावघ—	विरसावघ
१—	१३—	मादि नणा—	मादि ठाणा
१—	२०—	जमजवाती—	समजवाती
२—	४—	सूछे १—	सुछे ?
२—	१७—	(भडारी नमी चद १३ के पाछे)—१४ चुनीलाल	
३—	६ ७—	विधानाणा—	विद्याशाला
४—	४—	केसरी—	पजात्र केसरी
८—	१६—	मादिनाणा—	मादि ठाणा
४—	२१—	कयापी कने—	कयापी केने
४—	२२—	कयापी चानेन—	कयापी घाल्योते
			लखसो एज
५—	६—	उत्तर में है—	उत्तर ये ह्य
५—	११—	कहाँ है—	कहा जाता है
५—	१५—	उपाध्यका—	उपाध्यायका
५—	१७—	साधुय काला रगका—	साधुका काला रग
६—	१५—	उपहाणे—	उवहाणे
७—	६-१० ^१ —	श्रीर प्रतिवादी—	श्रीर धादी प्रतिवादी
८—	१४—	करते वा—	करने का
९—	१८—	पुरतु—	परतु
९—	२२—	भापसे—	भाषणे
१०—	१६—	गणा ७—	ठाणा ७

पाने पवती	घशुद्ध	सुद्ध
१६ ह्यासे पोसालामे मे से मुनीराजो को पत्र ये सो नोध घाती है ।		
१६—२०—	रगविजयजी—	रगविमलजी
१६— ३—	घादीसणा—	घादिठाणा
१६— ५—	पुष्पनन्द विजय—	पुर्णानदविजयजी
१६— ६—	घादीसणा—	घादिठाणा
१६— ७—	व्याख्या चारित्ररूपजी—	व्याख्यान वाचस्पती
१६— १०—	तीर्थेद सुरीजी—	तीर्थेद सुरीजी
२०— १—	पुणानद—	पुर्णानद
२०— ६—	खुलासवार—	खुलाभावार
२०— १८—	घाठा—	घाठ
२०— २२—	कमलेविजय	कमल विजय
२१— १०—	सख्यात—	सख्यात
२१— १५—	मोलावे—	मेलवे
२१— १८—	विकास करववा—	चोकस करवा
२२— ७—	पयुपण—	पयुपण
२२— १६—	नीलावणे—	पीलावण
२३— १२—	भाय—	भाप
२४— २—	भद्रवा—	भाद्रवा
२४— ४—	प्रदा—	पदो
२४— ६—	घोणा—	घोला
२४— २१—	तेमी—	तेमज
२४— १३—	गभाना दरवाजे—	गभाराना दरवाजे
२४— १४—	तेजा—	तेना
२४— १८—	भावती—	भाववी

पाने पत्ती	ग्रशुद्ध	सुद्ध
१०- २१-	सुगंधी वाचने-	सुता श्री वाचने में
११- ४-	ये नौकार-	ए नौकार
११- ४-	सद्यभुमल्या-	समये भुल्या
११- ६-	दीपमाहे सो नौकार-	दीपमाहे सो नौकारस
११- १३-	लाल अंगर समान-	लाल अंगार समान
११- १४-	कर्म शत्रु जितने-	कर्म शत्रु जीतने
११- १-	श्रावकामे १६-	श्रावको में
१२- ७-	अठम-	अठम
१२- ६-	एक अठम-	एक अठम
१२- १५-	खोवाणुनी-	खोवाणजी
१२- १६-	जणावेनु-	जणावानुं
१३- ६-	वधार-	वधारे
१३- ७-	भद्रकर विजयजी-	भद्रकरविजय जी
१३- ६-	मात्र-	माक्ष
१३- १३-	श्रवकाना	श्रावकोना
१३- १४-	वण वेलछ	वर्ण वेलछ
१३- १४-	मारो पासा-	मारी पासे
१३- १५-	बोजापाढो-	बीजापाठी
१४- ६-	महारज-	महाराज
१४- १३-	पडीत-	पडोत
१४- १५-	वधावेलछ-	वधायेलछे
१४- १५-	आला-	आटला
१४- १६-	अवीज-	एवीज
१५- १०-	शासवी-	राखवी

पाने पक्की	धसूद	सुद्ध
१६ ह्यासे पोसालाये	में से मुनी राजो को पत्र ये	सो नोध भाती है ।
१६— २०—	रगविजयजी—	रगविमलजी
१६— ३—	भादीसणा—	भादिठाणा
१६— ५—	पुण्यनन्द विजय—	पुर्णानन्दविजयजी
१६— ६—	भादीसणा—	भादिठाणा
१६— ७—	व्याख्या चारित्ररूपजी—	व्याख्यान वाचस्पती
१६— १०—	तीर्थद सुरीजी—	तीर्थद सुरीजी
२०— १—	पुणानन्द—	पुर्णानन्द
२०— ६—	गुलासवार—	गुलासावार
२०— १५—	भाठा—	भाठ
२०— २२—	कमलेविजय	कमल विजय
२१— १०—	सरुवात —	सरुवात
२१— १५—	मोलावे—	मेलवे
२१— १५—	विकास करववा—	चोकम करवा
२२— ७—	पर्युपण—	पर्युपण
२२— १६—	पीलावण—	पीलावण
२३— १२—	घाप—	घाप
२४— २—	भाद्रवा—	भाद्रवा
२४— ४—	प्रदा—	पदो
२४— ६—	घोणा—	घोला
२४— २१—	तेमी—	तेमज
२४— १३—	गभाना दरवाजे—	गभाराना दरवाजे
२४— १४—	तेजा—	तेना
२४— १५—	भावती—	भावधी

पाने पक्ती	मशुद्ध	सुद्ध
२५ - ४—	पुछला—	पुछेला
२५ ५—	भायीये—	भायीये
२५— ७—	सु०अ०—	सु० भा०
२५—२१—	भावनी—	भावनी
२६ - ३—	श्रा० १-६—	श्रा० व० ६
२६—१०—	घणया—	जाणया
२६—१५—	घणज—	घणाज
२६—२२—	मुकघो छे—	मुकघो छे
२७— ४—	छनाय—	छनाय
२७ - ५—	सकेन -	सकें नही
२७ - ५—	माणखाणी—	मोलखाण
२७ - ६—	पदसे—	पदने
२७ - ६—	मोणखाण—	मोलखाण
२७—१०—	नीलो—	नीला
२७—१२—	बीजी कई—	बीजो कोई
२७ - १३—	गुणे—	गुणो
२७—१४—	गुणी—	गुणो
२७—१५—	रामजी—	राखजो
२७ १७ -	सेवा—	लेरा
२८— ६—	निभागवार—	विभागवार
२८ ११—	उजमाण—	उजमात
२८—१२—	भेजो—	भेज
२८—१५—	घमि—	भावी
२८—१५—	नाम—	वान

पाने	सक्ती-	अशुद्ध	सुद्ध
१२६-१६-	मनी-	मनी	मनी
२६-१७-	जाणत-	जाणता	जाणता
३३-६-	वाणेद्रया-	वाणेद्रया	वाणेद्रया
३१-१०-	राजू-	राजू	राजू
३१-१५-	लोका-	लोकावसी	लोकावसी
३१-२२-	बीलोद-	वाणोद	वाणोद
३२-२१-	पाठ-	पठि	पठि
३३-१-	सहहोवानो	सभवहैछ-	एह होवानो सभव
३३-११-	सुदी ६ मगल-	सुदी ७ मगल-	सुदी ७ मगल-
३३-१०-	प्रविष्टा-	प्रविष्टा तारील	प्रविष्टा तारील
३५-३-	कारतक सुदी १५ सनी-	कारतक सुद, ५ स	कारतक सुद, ५ स
३५-१५-	चडासु चडा-	चडासु चडा-	चडासु चडा-
३७-३-	सुरदासजी ने	सुरदाम जी की	सुरदाम जी की
३७-१६-	उनकी पीढी-	उनकी पीढा-	उनकी पीढा-
४१-११-	भीमीया-	भीमीया ०१-	भीमीया ०१-
४१-१६-	Biesgam-	Badagaum	Badagaum
४२-१३-	रगमल जी-	रगविमल जी-	रगविमल जी-
४२-१३-	ढाला-	ढाला	ढाला
४२-१४-	मध्वे-	मध्वे	मध्वे
४२-१६-	लखवाने-	लखवानो-	लखवानो-
४२-१७-	लखीठु-	लखीसु-	लखीसु-
४२-२०-	अमेनि-	अमेने-	अमेने-
४२-२०-	उपाथवे-	उपाथवे-	उपाथवे-
४३-१-	स माभानोवाडागा-	ठं० माभानापाडा	ठं० माभानापाडा

वाने पवती

४३—१—

४३—६—७—

४३—६—

४३—१३—

४४—१—

४४—५—

४४—७—

४४—६—

४४—५—

४४—१२—

४४—१६—

४५—५—

४५—८—

४५—६—

४५—१०—

४५—११—

४५—१२—

४५—१६—

४५—१७—

४६—१—

४६—२—

४६—१४—

४६—१६—

अशुद्ध

भललनो उपाथय—

महाराजजो अज्ञाथी—

धमलाभम्या—

ता० ३६—६—४८—

अन वि०—

मानस—

रगावावन—

११—

भादरवा सुद ११—

रगा के भद का

खुलासा नहीं—

महेन्द्रपुरी म०—

छ—

कट्ट—

जावु—

हायछे—

तीथकना—

होयछ—

भादरवा ६—

धमलाममवचावस—

डडा—

करला—

विजयोदपुरी—

कोठीपल—

सुद्ध

विमलनोउपाथय

महाराजनी आजाथी

धमलाभम्यान -

ता० २—६—४८

अज वि०

प्रायग

रगावावत

११

भादरवावद ११

रगा के भद का सा

खुलासा नहीं

महेन्द्रपुरी आ०

छ

कह्युछे

जोवु

होयछे

तीथकरना

होयछ

भादरवावद ६-

धमलाभवचावसी

उडा

करला

विजयोदपुरी

कोठीपोल -

पाने पक्ती	घण्ट	सुद्ध
८७—१२—	पुरधानोसार—	पुरव नोसार
४७—१३—	मरनासमरो—	मरतासमरो
४७—१६—	जगतासमरो—	जागतासमरो
४८—६—	कोइमी—	कोइमी
४८—६—	सिखान—	सिखने
४९—६—	साधुपद २८—	साधुपद २७
४९—८—	झठार—	झडाई—
८९—१६—	पाणीगयन—	पाणीमयन
५०—१६—	पचभुत—	पचभुत
५१—१६—	डाक्टर—	डाक्टर से
५२—१७—	ममरे—	ममरे
५२—१६—	पापबघेतो—	पाप न बघेतो
५३—१—	उदर—	उदर
५३—१—	गोरासी—	गिरोली
५३—१५—	जबजाना—	या अलग होना
५३—१६—	वगेरा—	नीभरा
५३—२१—	नवतत्वा स—	नवतत्वों से
५४—२—	होजता है—	हो जाता है
५४—४—	समझताहूँ—	समझताहूँ
५४—१५—	पाणरी—	पाणी
५४—१८—	मिलना—	मिलता
५४—२२—	हगलवाज—	दगलवाज
५४—२२—	ध+इ—	भ+ह
५५—१७—	जानना रोगामा—	जातना रोगोमा
५६—१०—	रगना—पुरता—	रगनो पुरतो

पाने पवती	मगुढ	मुढ
५७—७—	अने धम्म तक्-	वायुतत्व
५७—८—	अरलवशपहस-	आकागतत्व
५८—५—	गुणकार-	गुणाकार-
५८—१५—	मिनने-	मिलते
५८—१३—	हाडपीजर-	हाडपीजर
६०—२—	दुग-	दुख
६०—२—	समार-	सागरे
६०—१६—	क-	करे
६०—१७—	मचार-	सचार
६०—१७—	अपना-	अपान
६०—१८—	चोषे-	चोषो
६०—१८—	पुन-	पुन
६०—१६—	अनाप-	अपान
६०—२०—	सधीगवीए-	सधीगन
६०—२०—	अव्याव-	अव्यात
६१—५—	साहसवह-	सोहमगुढ
६२—१०—	पदवीपर-	पदवीपर
६५—१७—	मानने-	मानने
६५—१६—	अपम देवध्वनी-	अपमदेवसे वदध्वनी
६६—१—	ऐसो-	ऐसे
६६—४—	अहनीकी-	अहनोने
६६—१५—	देसमें-	देसमें
६६—२२—	आपनासे-	आपनासे
६७—३—	अपने शास्त्र-	अपनेशास्त्रकी
६७—२०—	अनपर	अनपर
६७—२२—	अहिदु-	अहिदुके
६८—१—	आपनेना चाहिए-	आपनेना नही चाहीये
६८—८—	मोनवीसे कबीर जी-	मोतवी से कबीरजी

पान पक्ती	पशुद	सुद
७०—६—	श्री	श्रीर
७०—१०—	मासतीकको-	नासतीकको
७०—१३—	योगदोवहन-	योगोदवहन
७०—१८—	निविद्यान्य-	निविद्याना
७१—१५—	स्यालीए-	स्थलीए
७२—१०—	हडी-	हुडी
७२—२२—	प्यान-	ध्यान
७३—१—	रहप-	रहे ह
७३—१६—	माडीहो-	माडीहो
७३—१७—	नहीत-	तेहीज
७४—७—	बचावे-	नचावे
७४—६—	पहाउ-	पहाड
७४—१३—	लेवे-	लेवे
७४—१६—	लेवे-	लेवे
७४—१६—	तु-	तुं
७५—८—	(एषाण)-	(एषाण)
७५—१३—	भु डल-	भुमडल
७५—१५—	बोघान-	बोघात
७४—१७—	(१५) पासत्या-	पासत्या
७६—१०—	नेमाकाइ-	नेमाकाई
७६—११—	साय-	सास
७६—११—	भावाजाय-	भावीजाय
७६—२१—	सव-	स्व
७—८—	नारक-	तारक

पाने पक्की	घग्घुद	मुद
७६—५—	नेज—	नज
६०—१—	उत्रम—	उक्रम
६०—३—	दाडा—	दावा
६०—४—	वाचता—	वाचना
६०—१६—	जेधीरोते—	जेधीरोते
६१—१५—	पाठसाजोय—	पाठमाजोय
६१—१६—	हाड देसन—	हो उदेसन
६१—२०—	नेविघो—	ते विघी
६१—२२—	गच्छगच्छना—	गच्छगच्छनी
६२—५—	नोमकमुना—	तीसकमुनी
६२—६—	घगीनाय—	घगीताथ
६२—१६—	आधावर्माथीशक -	आधावर्माथीशके
६२—१६—	डवे—	हुवे
६२—१६—	करवी—	करवी
६२—२२—	मिरजी—	मिरजी
६३—३—	अवगडमा—	अनगडमा
६३—७—	आव—	आवे
६४—२२—	भोजने—	मोजने
६६—२—	सोची—	साची
६७—५—	सहान—	सहाय
६७—१६—	घमो—	घयो
६८—५—	घालनी—	घालनी
६८—१०—	निरतुकपा—	निरतुकपा
६८—१७।	जातस—	जातरा

पाने पक्ती	अगुद्ध	सुद्ध
८८—१६—	यात्राकीधी—	यात्राकीधी
८८—२२—	वदाना—	वदावा
८९—१—	लोमोया—	लोमोया
८९—४—	नेने—	तेने
८९—१५—	छेवेहोमिलोनु—	लेवेहो मिलोनुं
९०—२—	नीनो—	तेतो
९०—६—	हो जलदी—	होफरो जलदी
९०—८—	मारे—	माट
९०—२०—	अष्टापदवी—	अष्टापदनी
९१—२२—	है बाल—	हेवाल
९२—१४—	खरचे—	खरच
९२—१६—	पेडी—	पेठी
९२—१८—	वेका—	बॅको
९३—३—	भाराधना—	भाराधतां
९३—८—	रणतुरवा—	रणतुरनां
९३—१८—	सानना—	सासननां
९३—२०—	देवावाकाछे—	देवावाळाछे
९३—२१—	करमुं—	करवु
९३—२२—	माटेनेन—	माटेतेने
९४—३—	समाप्त—	समाप्त
९४—६—	८० मालो ३६—	दमालत्रीजेमालेना ०७६
९४—१६—	सेठ भाव—	सेठ भा+क
९४—१९—	भाव—	सेठ भा+क

